বক্তা।

वर्गाद

কঙ্গের অভিতীয় ধর্মাবক্তা

কুমার শ্রী শ্রীক্রফ প্রসন্ন পরিব্রাজতের বক্তৃতার সার সংগ্রহ।

এভূদেব কবিরত্ব কর্তৃক

শকলৈত।

বারাণ্দী।

धन्त्रायुक गतालास युक्तिक।

H: 24201

100 15

ৰুল্য । আট আনা।



প্রবৃত্তিমার্গ ।

नानारण्टलात नानानिभ जनामछात गणन दकान মহামেলায় পূঞ্জীকত ও স্থাজ্জিত হয়, তথন সেই উদ্ধাহ श्रमार्थतामि (निचया मतिरस्त हिन ल्याट्ड निमुध इस. मङ्द्रिलाव मभन्त भद्रनातम गामधी जक्ति २ कतिसा কিনিতে ভাগার সাধ্যায় ৷ হাবিশাল মহামেলার হুদার বিপণিতে জ্যাত্ত্ৰিত পণ্য রাশি সমুস্ত ই খালুৱাাৎ করিতে ভাষার প্রাণ মেন খাকুলি বিকুলি করিতে থাকে। (महे ताल कहे मःमात्रकार्य कहे व्यवस खना धगशीत অদ্ভ নহামেলায় আমাণের মত লোভে ফোভে গভাবে ভাভিতুৰ দীন দরিক্র জীব গঁণ সমবেত । মহামায়ার गहारमलात ज वन छ छ। छ। त ल्यान मरनारमाहन निहित् প্রালি এরেই সাহান রহিধাছে। ইহার সভায় गढानान् वह पूलानाम् भागशी मछादतत मिना हमदक व्यामता वाक्रके। अ उक्ताक्त मनल भगार्क गहेगात

कना था। (यन लालाशिक। भाषता छेख्य बख हाई बरहे. কিন্তু টত্তম বস্তু চেনা বড় শক্ত। সময় বিশেষে অবস্থা-विटमारय छान निरमारम रलाक विरमारमत याहा छेन्छन. অন্যের পক্ষে তাহাই হয়তো মন্দ বোধ হয়, শৈশবে যাহা छान नार्श. रशीनरन जाह। ८इस, आवात रशीनरन याहा ट्या जा हा है वर्षा का वाता के भारत विद्या त्वाम হয়। হয় তো তোমার অবস্থাদির অনুকুল হওয়ায় ভোমার পকে যাহ। ভাল, তাংহাই আসার অবস্থানির প্রতিকূল হওগায় কামার পক্ষে মন্দ। দেশ, কাল, পাত্র, অবস্থা নিবিশেষে যাহা উত্তয ভাষা চিনিয়া। ল e য়া বড় ই কঠিন। অনেক সময় আমরা মন্দকে ভাল ৰলিয়া বুঝি, এবং ভালকে মন্দ বলিয়া পরিত্যাগ कति। अनामि काल इहेर्छ अहे खाछि ऋश खनिमा বেশের বশীভূত হইয়া জীব এ মহামেলা কেতে ঘুরিয়া বেডাইভেছে।

এই স্বিস্থীর্ণ সংসার-সহামেলায় জীবের সম্মুখে অনস্ত কর্তব্য পড়িয়া রহিয়াছে। কিন্তু এই অসীম

काशाखादत मार्गा दकान्ति आमारतत अभितिष्टाशा निक কর্ত্তব্য তাহা প্রথমে বৃঝিতে হইবে। দোকানে থরে ২ সাজান জিনিশের সধ্যে যেটি আমাদের মনোমত e অতি প্রয়োজনীয় উত্তম জিনিষ্তাহাই বাছিয়। লইতে হইবে । 🕂 আমাদের প্রমায়ু অল্ল. আমাদের भक्ति मांगर्या निजाल है कींग. इंडतार धामता भीन मतिक পথের কালাল । অনন্ত শান্তের বিশালগতে অনন্ত মুদ্রান তত্ত্ব রূপ পণ্য রাশি নিহিত আছে। সে সমস্তই ক্রে করিবার সাধ্য আসাদের নাই। স্কতর 🗷 সে সুমস্ভের দিকে লোভলোলুপ দৃষ্টি নিকেপ করিবার প্রয়োজন কি ? याहा जानात्तत नित्कत शत्क श्राक्षनी ग्राहा जानात्तत নিজের উপকারে আসিতে পারে, তাহাই আমাদিগকে ৰাছিয়া লটতে হইবে। কিন্তু বাছিয়া লটবার উপায় कि ? जाबादमत दस्र जाबामामिशदक दम भिरक सहैया : যায়, আনাদের প্রাবৃত্তি আনাদিগকে যে পথে পরি-চালিত করে, তদমুসারে কর্ত্তব্য নির্ধারণই কি ঠিক ? কিন্তু ভাহাই বা কেমন করিয়া হইতে পারে ?

আমাদের প্রবৃত্তি যাহ। চার, ভাহাই যে আমাদের পলে উত্তৰ, ঠাতাই যে আমাদের হিত্কারী, ভাহা কে বলিব ? গনেক সমধ খেকছার বশবর্তী হইয়। আগরা ম্বারণ ভাবিয়া কুপরে গিয়া পতি। প্রসুত্তির ভাতনায় बार्निक मभरशंहे कुछ निष्ठात कतिनात भक्ति भारक ना। ম্মতরাং স্বেঞ্চান্ত 'ছত্তন' শস্ত্র নির্বাচন করা বড়ই চুক্ষর। কিন্তু জগতের জীব স্বেচ্ছাভিমত উত্তম বস্তু পাইবার জন্ম বালায়িত। প্রাবৃত্তি-রাগ্রিপ্লিড উদ্দ পদার্থের প্রত্যাশায় জীব সাকুলিঁত। যাহা প্রেকের অগুক্ল, चाप्र "উत्रम", जाराहे भाहेगात क्रमा कीरनत चन्नताञ्चा शिशास्त्र। रेनमासिक श्राद्धित मस्राक श्रामान करतन. আমানের মন্ত অন্ধিকারী ভীব কিন্তু এরেতির দাস । अरुताः अद्वित्क भागता छ। दिख शातित ना । दय ভার্তি নিল অকুতির প্রতিকূল, ভাষা অবতাই পরি-हार्या। किन्न ८ग शहाँ ज जनकारत हालि हहेगा ध्यक्र्रांडत हाक्स हत्र । हृत्र क्रिक्ट शास्त्र, छाहा क्यन ह भीतरक कर्डी। १९५० च के करतना । धार्ति यञात्रजः

हिस्क लाग्य नरहा व शान ब्बनागर मःमारत लाख्या है

प्राचा-माहिमाचा इदेशा अञ्चित हिम्क न (मानन इदेशा

गाड़्या इहा भाख्या क्षा शांत्रभान क्षण शनिक अञ्चलस्य

हादा कि प्रेया शिवकान यन्ति कि काला नदर करहेरा।

हाद्या मार्गाविक कालियुनि भाषा मृख शांत्रभा ब्बल्ख

कि विशा खंठाम खंचत कि विशा सहर्क द्रर्ग । अञ्चलित

शिक विष्णा िक कि सुथ इदे कि विशा आक्रिक थिया निकालित

थिया निकालित सुथ हिर्द शिवा हो। अञ्चलित

थिया निकालित सुथ हिर्द शिवा हो। अञ्चलित

थिया निकालित सुथ हिर्द शिवा हो। अञ्चलित

মনেকে সন্দেহ করিতে পারেন, প্রের্ডিকে নিজ দিপত প্রের্ডিতে না দিয়া ভাষাকে সংগত—নিয়ানত করিলে ভাষাতে হ্রণ কি । প্রান্তর গাত সঙ্গুটত করিলে ভাষাতে যে মুশান্তি আরও বাড়িয়া উঠে। এ সন্দেহ নিভাস্তই ভ্রমান্তক । প্রুম বর্দীয় বালক রৌদ্রে দৌড়াকৌড়ি করিতে চায় । পিতা ভাষার দৌড়ান-প্রেরি সংগত করিয়া হাহাকে দীরগমন শিক্ষা দিলেন। এই রূপ প্রেরিজ সংগমনে গাণকের আপাততঃ

একট্ অভ্লি, জামাল বটে, কিন্তু ভাছার পরিণামফল যে সঙ্গনময় জাহা বালক এখন বৃবিল না, কিন্তু পরে বৃবিধে। স্তরাং এবৃত্তির সংগ্মনে আপাভভঃ একটু তঃখ হয় বটে, কিন্তু ভাছার পরিণাম-কল স্থ্যয়। বেচহাচারী আপনার ক্রিয়াকেই ভাল বাসে, বৃদ্ধিমান্গ্র্ণ ক্রিয়ার পরিণাম ক্রেরা দিকে ভাকাইয়া ক্রিয়ার অসুষ্ঠান করেন। অপরিণামদশী বিমৃত্তেভাগ্রণ ক্রিয়ার ফলক্রানে অসমর্গ্রহা, ভাই প্রবৃত্তিকে সংযভ করিতে পারেন্য-চায়ও না।

শ্ৰামাদের যাহা মনোরঞ্জনকর— আশুস্থাকর, প্রারতি আমাদিগকে সেইদিকে লাইয়া যাইতে চায়, কিন্তু ভাগতি পর্ক্ষ কলাণেলাভের আশা স্তদ্রপরাছত। আমাদের যাহাতে প্রকৃত মঙ্গলা হয়, যাহাতে নিত্য নির্বাহিত স্থালাভ হর প্রবৃত্তিকে সেই পণের পণিক করা উচিত। মহামেলায় প্রহণোপ্রোগী নামাবিদ জেবা প্রেভ পাকে। চক্চকে খেলেনা দেপিরা বালকের মন ভুলিরা ঘায়। স্তর্বং তাহা লাইবার জন্য বালক

চকল হয়। কেননা অপরিপক বালবুদ্ধি অন্য তাই ভাহার ভাল লাগে। কিন্তু বৃদ্ধিনান্ বহু । বাজি বেলেনার চমকে ভুলেন না, তিনি তেখন জিনিষ ৰাছিয়া গ্ৰহণ কলেন কাছ৷ তাঁহার প্রয়োজনীয় যাহাতে কাঁকার ভাল হয়, যাছা ভাঁহার নিজের উপকারে আসিতে পারে। এ সংসার-মহামেলায় যিনি হুচ্ছুর,তিনি <u> हेकप्रेरक भाकातकरत्वत्र स्थान्मर्था प्रत्यन गा, जिनि</u> তেমন জিনিষ প্রবৃত্তির ক্ষুকুল করিয়া লন, বাহাতে তাঁহার মঙ্গল হয়। ভুতরাং খার্ডির সকল কথাই শুনিলে চলিবে না। ছলবিশেবে প্রবৃত্তির বল্গ। সংযক্ত করিতে হটবে। শুরুজনের নিদেশাকুমারে শাল্পের উলিভাতুসারে প্রবৃত্তিকে অগঠিত ও স্থপণে চালিত করিতে হটবে। কিন্ত অভিযানে পরিপূর্ণ জীব নিজপ্রবৃতিকে এতই অভান্ত মনে করেম, যে তিনি কাহারও কথা না শুনিরা ক্ষেত্র স্বাধীনতাই দিতে চাহেন। অভিযানই দাহার সম্বৰ, তাহার পদত্তলে শাস্ত্র-মাজা, শুরুণাকা, সাধু-मिर्गत मञ्जादमन हामि निम्मिंड बहेरन छ। हार्ड

आत भान्छना कि १ मश्चित त्माकारन स्थ वञ्च आभिक, বে ভাহ।ই ব্যাল্ব সাজাইয়া রাখে। ক্রেডাকে ভাহাই पिशा (म পরিত্র করিতে চায়। দেই রূপ যাহার ষাধুত। বিজুমতে নাই, অভিযানই অধিক; মে নিজের (माकार्य अभिनात्वत श्रमाता है माछा है। साथ । अखता । ভাহার কাছে গভিনাৰ ছাড়া আর কি পাওয়া বাইতে शास्त १ (ग (म नरतत दिनाक, भ राहे जान मस्तत লোকের সওলাভেই ঘুরিয়া শাকে । যথের সর্যাদা नीह, दम नीहर (अगोत मधनी एउड़े या है एउ छन द्वास करत । चित्रारमत मक्षीर्य नर्याामा गानात मधल, छ। हात নিরভিমান খনত মর্বাদার আপার পর এক্সের দিকে কেমন করিয়া প'ত হউতে,পারে 📍 ভাই বলিতেছি অভিমান পরিত্যাগ করিয়। শাস্ত্র আছর। অফুসারে প্রবৃত্তিকে সংগ্র — সমাজ্জিত করিয়া লউতে হইলে। ঘরক্ষার কোন সামান্য কিনিস ব্যবহার করিতে इंडेटन आमता जाश त्रीड कतिशा-भार्व्यंक कतिशा लाहे। चात च । स उत्भात फेक्क प्रतार याहे नात स्वता

य अतृष्टिक भाभना नानणात कतिएक छाहे, छाह्रदक (भोड कात्रा सह्ह ६३(१ ना. व कान का १ य७। न-मुख्य श्रद्धां छ दक्ष यामता शालेशांक, छ रहार कार्गाक कान कतिएक शांतन वा. देश हिन । किश्व काश्रातक श्रीतभाद्धि क क्षित्र। निक की रानव धर्मा क हवा भाषाना-পরে। গিনী করিবার ক্ষমত। অংনাদের খাছে । याश আমানের স্বাভাবিক, ভাগা তাগে করা অসম্ভব । আনরা স্বভাবস্তে চক্র নৃত্তিশাস্ত পাইয়াছি । স্কাডা-लाटक छन्युक ठक्कत भयाल भगार्थ व्यक्तित्व हे पृष्टि শক্তির ভাষা গোচন হউগেই ১টনে। শভ চেন্টা করিলেও এ দৃষ্টিশক্তির গতি কেহ রাজ করিছে পারিদে না। সেই রূপ স্বভাবসূত্রে ক্রকগুলি সংসার আমরা বাধ কর্মানুৱে পিত। মাতার কাচ ১ইতে अ बनाना नान कातर्ग शाहेशांह। (अह भाषा मगड़ा প্রীতি থাবুত্তি মাদি সমস্ত ই পাইয়াছি। এই সাভাবিক वृद्धि छ निक्त अकनारत है श्रातशत कतिय रक्तम तिक्षा १ अभागमृत्व भतीत्वत भागनमं लहेता त्य

क्रीयशाट्ड, भड ८६का क्रांत्रलं डाहा अक्रांत्र केठावेट अभिता यात्र कि ? केठावेट आता यात्र मा, কিন্তু মাজিয়া ঘদিয়া পরিস্কার পরিচ্ছম করিয়া লগুরা। যাইতে পারে। দেই রূপ বভাগ-দিত্ব সংস্কারকে শভ भिका भिरम अके हिएक शाता या हेर ना, कि खे भिकात खर्म यार्ष्कि ह कति॥ न बद्रा घाहेर्छ भारत । रेवनाश्चिक ু প্রবৃত্তিকে ত্রহ নিকৃষ্ট আবর্জনা বলিয়া পরিত্যাস কারতে চাহেন, আমরা কিছ ভাহা চাহি দা। বে মাটি--**एक कर्मगरक एकामहा आवर्षक्रमा विलास প्रक्रिकाश** করিতে চাত যিনি উপাদক তিনি দেই মাটিভে শিবলিক্স নিমাণ করিয়া নিকের সাধের উপাদ্য Cम ब छात व्यक्ति छ। करतन । (स गःऋ।त--- (स आवृत्ति क ट्यामत्रा चावर्क्कना-- नःगातवक्षानत ट्युष्ट विश्वा তাগে করিতে চাও, আমরা তাহাকে শিবলিক্সের নাায় স্দাকারাকরিত করিয়া ব্যবহারোপ্যোপী कतिया लडेट ठाडे--- मरगात तक्षम (माठम कतिएड চাই। খনৰ্গ যথন পিগুকোরে খাকে, তথন ভাষার

व्यवहात इत न। मुख्य किन्छ छाहा यथन अर्थकारतन हाटल भएए, उथन चलकात करभ शतिगढ हिहेता रा मुनर्ग वतनीम कान्त्रिमम मिवामृर्किएक छेम्छानिक एम । त्महे ज्ञान करानर-शमारि अहे मकुमारिए कर्मक ম্বর্ণ লইয়। আমর। কাম্ম্যাছি । প্রকৃত শিল্পনিপুর वर्षकारतत माहार्या (म छवर्ष विक्रिक अनकात शक्छछ कतिएक इहेरव । तम अनकातश्रीम अञ्चलि भूतिया ক্যন্যতার অলক্তক্র্যনামর্থিত চরণাস্থুকে যে भिन छेशहात मिन, त्मरे मिनरे ऋष त्रिष्टिन, धात्रुष्टि চরিভার্থ হইবে । তখন প্রবাত নিবৃত্তিকে নিরাশ করিয়া নিলা নির্দান নিকেড্রন ভোষার নিবাসের यावचा कतिया मिरव।

४ शृंदर्ब निवाकि, श्रवृत्तिक मृन श्रकृति क्यूकृत कतिया नहेट हरेदा । कीद्यत कृष्ण श्रकृति नीत्रद मृन श्रकृति नित्क मृभ कितावेता मृक्क छाद याहा हाय, त्यहे शार्षना शृत्तभ कतियात कना श्रवृत्ति मन्तिन। शतिहर्या। कतिएक थाकित्य । मृन श्रवृत्तिक

छन्। य कात्रा आनृष्टि माशास्त्र ७ विश्वीन इस स्मेर क्तण (निक)त वानका कतिए इहेर्न । प्राप्ति इहेशा नि अ अलटम कूमास का छत • देश। यथन का मिसा छेटरे, त्म जनम वृद्धिक भारतमा किरमत कमा दम कै। निष्ठिष्ठ, ভাহার কি ক্লেপ হইভেছে। কি পাইলে ভাহার কামা •িনবুত্ত হউতে পারে, মে ভাচা কানে না। ভাহার শানীর প্রকৃতি কি অলপগ্রস্ত চইয়াছে, ভাছা যে । अपतरक मुध कृतिसां वृद्धा है एक পाविएउएए ना। छाहात थान किरमत कना चाक्त रम **छार। ना निस्छ भातित्स छ छाहात क्षां**विञ्चल শারীর একুতি নারণ ভাষায় তালা বলিয়া দিতেছে। (गहें धकृंडत क्रमनी मृत्यतक्रं७ व्यर्थार वालर्कत মাতা শারীর একুভির সেট গুছ্ মণ্মগাণা ব্রিভে ला(तम। ७। है। छनि खन सहेश। वानरकत भूर्य (मन, त्म अन हिमा क्य पान करियात कना लिखन थावृद्धि স্বত এৰ ফুটায়া উঠে। শিশুৰ ক্ষুণাৰিশুক শারীৰ প্রাকৃতি দুর্মণারায় পরিকৃপ্ত হইর। প্রফুল্ল হয়। শিশুর শারীর-

প্রকাতর কুষারূপ তাংকালিক অভাব যেমন সাভার जनाशास भून इस राष्ट्र तथ और शक् छित व रेक्टन स्य মভাবরেধা—মে খাণের মক্ষাগত কুণা—মে অভপ্তি অনাদিকাল হইতে অন্তঃস্থালা ফল্লন্দীর মত সৃক্ষা-রূপে ধারাহিত হট্য়া আগিতেছে, সে অভাব-সে অভ্তি কগমাত। মূলপ্রস্তি মা অনপূর্ণরে ভেন্য-भारत यि भिन भांत्र छ एकेरा, राहे निगरे कीरवत कान्ना शांतिरव, (काल!क्ल-कलतव ५% इहेरन. हेल्लिश- हाथना, भन हाथना उक्षित्र हहेशा[®] जागित्य. হুদ্ধ সুশীতল হইবে, দুংধ দুবিপত্তি বিনিয়ন্ত इड्रेमा घाटेटन अ×्वारसत तकारल भारसत ८ करल 6ित-निरात बना घूनाहै।। शक्ति। मरहरूरन भाखिम्।-পানে অচেতন হইয়া থাকিবে। শিশুর শাতীরপ্রকৃতি क्यात यञ्जनास काउत रहेता मारतत निर्क् छ।क।हेत्र। (गमन कैं। निता छेर्फ, रमहे जाल कीन शक् कि खुक्त ह উপদেশে নিজের চিরদিনের মজ্জাগত অভাব—থাণের মর্ম্মাত কুণ। হাগ্রত করিধা মূলতাকুতি ঋগদাভে।

पूर्वात हत्व हत्त माथा ताथिया त्य किन कैं। विना छठित्व. ८मरे मिन मुद्याम पूर्व न का थन न वर्षी रख। जा कता एक-খারীর মাধ্যের দৃগ্ধামুক্ত ধারায় জীবের আকাজকা— প্রবৃত্তি প্রবাহ চরিতার্থ হইবে—চিরদিনের সাধ মিটিবেস অনম্ভপ্রকৃতিরূপিণী মা কুলে জীবপ্রকৃতিকে পরিত্ত कतिनात कना-धक्षित अपूर्णामिनी প্রার্থ তকে চরিতার্থ করিবার জন্য সর্বাণাইত উন্মুখী হইয়। तिशाहिन, किन्न बामाएत न्धातृति माम्यो ना इहेता-প্রকৃতির অভিমুগী না হইর। চিরদিনই বিকৃতির পথে চালিত হইয়া আদিতেছে। শাস্ত্রের আদেশে গুরুর নিদেশে ধার্ত্তিকে প্রাকৃতির শামুখীন করিতে হইবে, ध्यत्रित (ब्लांड উन्টाইग़। पिट्ड १३८४ । मान्यत ব্যক্তি গত প্রকৃতির গুছতত্ব যিনি বুঝিতে পারেন, (कान् खेशानारन—दकान् श्रापत कि तिश खारण काहात প্রকৃতি গঠিত, প্রকৃতি কোন্ দোদে উহা অনাদ্যা একভির সহিত সন্মিনিত হইতে পারিতেছে না, ও (कान् अधरभट्टे वा अटे द्वांग निवृत्व क्टेरन, अकावर

ষিনি সমাগ্রপে অবগত আছেন, প্রকৃতিকে তাঁহারই কথাতুমারে পরিচালিত করিতে ছইবে। ত(হা হইলে প্রবৃতি আর বন্ধনের ছেড হটবে না।

কেই ২ আশকা করিতে পারেন, আমাদের প্রবৃত্তি कान পথে চালিত হইলে कि ज्ञान छन नाछ স্থামরা চিম্বা করিয়া তাহা বুঝিতে পারি । ভাহাতে कुकुछे शाम भाञ्चक दी नागन भिर्छत छे शाम अनिवात **ध्याराक्रन कि ! छ। इन्ता इन्छ शहिना में मायूय**. আমরাও মামুষ, ভাঁহাদের বৃধিদ্বণক্তি বিচারশক্তি िखाभिक हिल, भागारमत बाह् তাঁহাদের সহিত সামাদের এমন কি বিভিন্নতা আছে, (य ठाँहाता मकल विषया प्रक्रमामञ्जल जामारमत অপেক। বেশী ব্ঝিতেন। এমন কি পার্থকা আছে যে ভাঁছাদের কণা মানিতেই হটবে। এ আশকার আর উত্তর দিব कि ? छ। नतुष्त श्विगिश्य वामाराम्त ममान-স্তারে যিনি আনিতে চাহেন, তিনি নিভাস্তই অজ্ঞ ও वाङ्ल। अभिरमत गरिङ आभारमत প্রভেদ বিস্তর

পরীকা করিলেই তাহা ব্রিতে পারা যায়। দৃষ্টান্ত मिया कथाछै। तुः । वेट्डिश वक्छ। त्लो श्विर्मिंड मृहित्क চুম্বকে ঘর্ষণ করিলে ভাছাতেও আকর্ষণী শক্তির শকার হয়। যে চুম্বকত্ব প্রাপ্ত হয়। সেই চুম্বকত্বপ্রাপ্ত (Magnetized) সুচিকে অপর একটা লোহনির্দাত गोंगातन मुहित निक्र ताभित्रा द्विथा छुटेहित्वरे म्यान পলিয়া শোধ হয়। কেননা গুইটির আকুতিগত কোন भार्षका ना है। किन्न भही कात निकास किति कुछ हित शार्षका स्थित व्या गाम । अथन जन्मे (लोकनिर्मिक স্ভিকে সেই ছুইটির কাছে আন দোধ, দে'খাবে মে ছুঁচটি মেই আকর্ষনীশক্তিশম্পন স্চির ।দকেই দৌড়িয়া याइट्र ८क्नमा ८७ जाइन्ट आकर्यन केड्रिड । छगन अथत हूँ ठिति यञान अन्। नि इहेशा शर्छ। তথন বুঝিতে পারা যায় উভয়ের আকৃতি গভ माष्मु वाकितात शक्रिकाड—मिक्किन्ड कर पार्वका। (भड़े क्रथ (जागात णागात गांश्क नाग विभारकेत আকুতিগত পার্পক্য পাকিলেও প্রেক্ডিগত সাধন শক্তি-

গত বিলক্ষণ পার্থকা আছে। বেদবাাস মাাগ্নেটাইজ্ড कृषि बामि दिन ने तहे हुँ हैं विश्वीर हुँ तहा ने त्वमवरात्मत "जाभमी" मिक्ति ठाँ। हात्क वत्नीय कार्यात्क. তাঁহার প্রকৃতি গঙ্গার সাগর সঙ্গাসের প্রকৃতির স্থিত অভিন ভাবে দ্রিপ্রিত হইয়া গিয়াছে। **जारे क**गर उँ। हात मिटक आक्रके रूडेशा (मोडिएक छ । भाभारतत "छायमी" नांक बामानिशतक ६ मिन कतिया ज्लियात्व । जाहे লগতের বাহির হইয়া পড়িডেছি। স্বর্তরাং প্রভেদ বিস্তর। স্বর্গ ও নএকে আকাশ ও পাতালে মত পানি थटलन, त्रमनााम ७ बाबादमत गरमा उउथानि शरकम। আমরা নরকের কাট হইয়। 🕻 দবতার আ্যানে বিদ্রে যাই। শৃগাল হইয়া সিংছের অধিকার কা'ড়িয়া ভাইতে আমাদের এ অপরাধ মার্ক্রনীয় নহে 🏊

কি শর্মনাক্ষ্যে কি সাংসারিক রাজ্যে সর্পর্জেই প্রাকৃতিকে উচ্চ্যুগ্রল ঘোটকের মত উল্লাক্ত সরলানে ছাড়িত দিলে চলিবেনা। যথন ধাহা প্রাণ চাছিবে;

उथनहे जाहा कतिरल मुर्क्तिभाजित गागरत पुनिरंज हा। (मण काल, \शांख (चरन शिंछ। भांछ। ও खुक़कारनत अ व्याश्ववाका भिरत्नाभाषा कतित्रा अहे नाना-বিধ ৰিম্মকুল ঘূৰ্ণবৈত্তৰিকোভিত সংগারসমূদ্রবক্ষে প্রবৃত্তির গিকে ধীরে ২ চালাইতে হইলে। এ ছস্তর ভবাৰ্ণবে ভুফানের ভয় আছে, প্রবল বাটিকার আশক। बाह्न, खरा शाहाफ़ शर्वा । भाका लाशिया हुन विहुन रहेवात मञ्जाबना चार्छ । ञ्जताः मकल निक् माम्-लाहेटक हहेटल छक्र-कुर्वभारतत श्राद्याकन (आटि गा जागाहेल हिल्द ना । (यहहाहाती कीव कथन ९ ज्रि शास ना। जाहात चर्जि हिन २ वा जिसा छे (हे ।

জীবপ্রকৃতির অভাব—আকাজ্য। অনাদি অনন্ত।

এ অনন্ত অভাবকৈ পরিপুর্ণ করিতে সান্ত পরিছিল

সাংগারিক বিকৃতিময় জগৎ সমর্থ হইবে কেন ! যে

নিজে সীমানিশিষ্ট, সে অসীমকে আয়ত করিতে
পারিবে কেন ! দে নিজে ক্স্ত্র, সে মহৎকে

ভাবরণ করিতে পারিবে কেন 📍 যাছার ভৃষ্ণা বিখ-ব্যাপিনী, কুদ্র জলাশয়ের স্বল্প সলিলে ভিছার কি কুলাইরা উঠে 🔊 অগস্তা মুনির মত যাহার ত্র্ঞার বিরাট মূর্ত্তি তাহার জন্য অগাণ সাগরের অগীম জল-রাশি চাই, অনম্ভ নির্কারিনীর অফুরস্ত শাতল সলিল-भाता ठाइ, याहा ठितिनिन आम अतिया भाग कतिरता छ कृताहेत न।। जनस मृत्यक्ष भाषा। भक्तिहे जे শান্তিস্থী অমুভনিকারিণী। আইম জীব ় ঐ থেম-मन्माकिनीत छहेरमर्भ जकनात आगिशाँ माँछाछ। ত্রি গ্রাপত ও দেহ যাদ জুড়াইতে চাও ঐ পতিতপাৰনী পুণাধলিলা ভাগীরপীর ঘাটে নামিয়া অবগাহন কর পিপাञ्च कीत। त्कान निर्विशिगी इडेट्ड ले ट्यायशनाइ বাহির হইয়া আনিয়াছে, তৃষ্ণার্ভ তুমি, তোমার তাহা জানিবার প্রয়োজন কি ? ও অক্ষতত্ত্ব রূপ ঝরণার মূলভত্ত্ব ন।ই বৃঝিলে ! তোমার আমার মত কুল জীবের ও অনস্তত্ত্ব বৃঝিয়া লাভ কি ? বুঝিবার সাম্প্রই বা কোথায়! ভোমার শিপাসা জন্মিয়াছে। গঙ্গার উৎপত্তি-

श्वान भावे वृत्यित्त, शक्षात (म घाटि माभित्न, टिलामात তৃষ্ণার মত জ্বল স্বৰ্ধিই পাই∉ব। আমাদের মত কুছে कौरनत अन्त क्रम (शाष्त्रपत्र डांगत अनुस्त्र हो व्यनात्र नित्मम भर्गा शतिशूर्य ब्रहेता (काशात्र ज्ञांगत्रा यात्र । विष्ठात विकर्त छ। ডिश मा छ, विष्ठा वृद्ध छ। राज्य অভিমান উড়াইয়া দাও, মান অপমানের ভান দুর করিয়া দাও। এদিক ও দিকু তাকাইও না, সংযাতমেলার क्लानाहरल कर्नभाक कति । मा, भार कानत क्यात নিজের কাজ হোরাইও না, সানব দেহ ধারণের গুভলগ্ল त्रथा नके कर्विष्ठ ना, । भानत विश्वार्थ असुधार्य ज्ञात चार्तर्ग मार्सित हत्रगाशकार्भत चायुक्रमस গা চালিয়া দাও, তোমার 🕻 এত।পজাল। মিটিয়া যাক্। সের স্বটন ঘটন পটায়নী মহাসায়ার অনন্ত শক্তি-अनुष्ठ भाषारकार कुलनाय भागात गुरू की है। की रहेत অভাৰ নিতান্তই হুচ্ছ—নিতান্তই নগণ্য। নত্যাত হুচ্ছ আভাবের জন্য হাহার দয়। ভিক্ষা করিছেও ভবস। **क् स ना । यिनि ताजाभिताज, मनि मृद्धन की तका** 'न गँ। ठात

শভত সংসং থাকে, ঠাহার কাছে দুইটি পগুমার ভিজুক ইইয়া তাঁহাকে বাক্স খুলিতে সে ঋগুরোণ করে, সে कि लागम नरह १ (महे जल ७ इन्मर्भ कल याहां ब পদক্ষতক্তলে কুড়াইধা পাওয়া যায়, মেই রাজ-ब्रास्क्रियों भारतात कार्ष्ट्र गामात भठ कान जीरनत के स **শভ ব পুরণ জন্য দয়ার ভাণার ধুলিতে অঁমুরোধ** कता कि निर्वास्त्र अध्वा गरह। स्नताः किन्याहरम ভাহার কাছে দয়ার প্রাণা হইয়া দাঁড়াইরু ? কেহ ২ জীতার কাছে প্রার্থনা করিয়া পাকেন মা। গামাদিগকে ভিক্রিণাও ৷ আমি কিন্তু ব্ঝি, আমরা এ প্রার্থনারও व्यतिकाती न हि। महा गरी मा भन्ना क तिसा य म व्यामा भिने दिक ভক্তি पिट्डिरे चारमन, छाँदा इटेटल डीहांत अन्तर अस्ति ताभिन दकायाम १ ज अभिनिद्ध अन्याम निष्ठा इटछ दम द्वमामाता धतिन दक्रमन कतिया 🛉 🙉 कठिन পासार्ग रम इंट्रांमन अग्रुड बल्लंबीरक रवालन ्कमन कतिहा। १ फल्किसन्दात (पनमन्तिहन নিউত্কশ্যে যে কৌপ্তমণি অভি যতনে গোণনে

নকিত হয়, তাহাকে আমার এই দহাপারিবেষ্টিভ হৃদয়াগারে বাথিব কোন্ ভরদায় ? স্থভরাং ভাঁছার কাছে চাহিণ কি ? ঠাহার কাছে চাহিণ মা। আমার সম্মুখে একবার দাঁড়াও, এ অপনিত্র হালয় পনিত্র হইরা যাউক! এ অপরিস্কৃত স্থানেতে পরিস্কৃত করিয়া ८डामान गिरकत निम्तात **উ**পযোগী कतित। नख । ें अ बकुमम कर्फात कार्धा कूछ्याखत्। निष्ठाहेश। नश्च । ম। ইচ্ছা হয়, ভোমার দাস বলিয়া আপনাকে মনে कति किन्नु गनः शान ज्ञान हमकिशा वरल, विधि विकृ শিব ঘাঁহার দাস, ভাহার দাসত্ব করিতে চাও কোন महित्। (नित्। (डामारक "मा" विलाह वर्ष माध यात्र। किन्नु गणन जीति, ज्यान जागान नित्र थान कै। शिशा छेर्छ। काहिरकरत्तत गठ कि एक खिल्ला महारीत 🛾 সুর্নর বন্দিত প্ণাধিনায়ক যাঁহার পুত্র, আমার মত कुछ की । डाहारक मा निलाउ शास्त्र रकान् नाहरन । ভোমাকে "ভক্তবংগল বলিয়াও ড।কিতে পারি না, কেননা আসি যে পরস অভক্ত । বলিভে পারি

ভানাথবৎসল " ৷ কেননা অনাথ দীন দুঃখী এ জগতে আর কেহ নই। সহস্রমর্ত্তি ধারণের কথা শুনিতে পাই। ∍খামার ইন্দ্রি গ্রাম উচ্চুখল এবেটির দশীভূত হ**ই**র। हातिनिएक हुटे। इंटिकतिएडएड । अन्दात अञ्चर्याभी দেশতা ভূমি, একশার " স্মীকেশ" মৃত্তিতে • অন্তরে আবিভূতি হও। ইন্দ্রিয়ের অধিষ্ঠাত। হইয়া ইন্দ্রিয়গণকে চারু চরণাভিমুখে চালিও কর। আমার উন্মত মন মাতঙ্গ উদাম হইয়া নানা পথে পে)ড়িতেঁছে ৷ তুমি অঙ্গুণ চিহ্নিত চরণম্পার্শে ভাছাকে শ্রুণাসিত কর । কোন ভাষায় ভোমাকে ভাকিতে জানি না, কি রূপ স্থাংস্কৃতি ভাষায় ডাকিলে ভূষি ক।ছে আসিয়া দর্শন দাও, ভাহ। বুঝি না। শুনিয়াছি, যুদ্ধ হটয়াছিল, তখন কাতর গর্জরাজের অভিনাদে আহত হট্যা ভূমি শুরু চক্ত গদ। পদ্মধারী বিষ্ণুরূপে দেছিয়া ভাদিয়াছিলে, গভের ভাষা ভূমি শুনিতে পাও, আর মন্ত্রাের ভাষা শুনিতে

পাও না ইহাত মনে হয় না। তাই বলি মা। গংসারের
সকল কণা ত্রাইয়া দাও, সকল রতি উড়াইয়া দাঞ,
সকল বাসনা পুড়াইয়া দাও, আমার সকল অভাব
ভাসাইয়া দাও, প্রেবৃতি প্রাহ্রে ভোমার চর্ণরেণুড়ে সিশাইয়া দাও।

x **ভाরতে** छेश्मत ।

कृशना-श्त्रमञ्ज উरम्ताशम एक

(কুমার জ্রীকৃষ্ণ প্রধান পৰিব্রাহ্মক ক্রম বন্ধা ুড়া)

ছঃশ ছবিশাত্তর নিদারেণ বজ্ঞাঘাতে দেছ व्यान कोर्न ५ निभोर्न हरेगा यारे ७ एड्, यञ्जनात নিম্পেশনে অস্তি পঞ্জর খণিয়া পাড়তেছে, ছঃসময়ে⊕ ছুংখী যদি ভাগের সাপা প্রথিতে শায়, ছোর আন্ধকারেও দীনপ্র:পীর পর্বকৃটিরে প্রান্ন আংশাকের রেশা षित (स्था (प्रा, काष्ट्रा 5 हैं त्य (म ऋथ व्यथ क व्येक, (म फुक्क **ञारलाक कोन इन्छेक, कैनिक ठक्क, रंग मुह्**रकेंद्र সে ভবের কণিকায় ভংগীন মনং প্রাণ মাচিয়া हैटके—निष्य(भत कना कु:(अत छी दका ८भ कुनिया মুহুঠের জনা ভাহার চির আঁগার গৃহ উলিয়ারা উঠে। আৰু ভারতণ্ধের মধা তুদ্দিন বিষম তুর্বি-**छःभवत्र जातर्ड देश्यत्**यत् कथा प्र**ा**र्वत्र

মত হইতে পারে, কিন্তু এ সংগ্রে হুখ আছে, শান্তি चारह. ध धीयग देनतारभात गागरत जामा छत्रमात ज्ञास काहिनीत क्षिका गांव अनित्व श्रांग बानत्म नाहिता উঠে। অনেকে বলিতে পারেন, আলি এ দুংখের দিনে इर्भित रुपा (कन ? वर्छमान ভोत्रजवर्ष प्रःभगागरत निमग्र। কি রাজনীতি কি স্যাজনীতি কি অর্থনীতি কি ধর্মনীতি मकल निष्ठाहेल जातक हीगांतक। **धाथ** हहेगाइ। ভারতের বিচিত্র প্রাদাদের চারিদিকেই ত অগ্নি লাগিয়া পুড়িয়া ছার পার হইতেছে, এমন তু:পের मित्न ख गाथाग्र हाल मित्रा काँ मिवात है कथा। धामन উৎসব (कन ? न जाका छ छ । उन र मि কোন নৃত্য সমুদ্ধি লাভ যে, নৃত্য জী প্রাপ্ত হ্রয়া যায়, তৰেইত উৎসৰ করিবার কথা। কিন্তু ভারত ত (म भताभीन, त्महे भताभीनहे चाह्न, तम हु:भी, तमहे ष्ट्रःभोडे चाटक, ८र मृना, ८मडे मृनाई चाटक, **क**टन अ উংসণ কেন ? তবে এ নৃতন জম্জমাট কেন ! যিনি এ ছধা বলেন, তিনি ভারতের মর্গ্রকথা

ছু:পের মধ্যে উৎসব কেন করিতে হয়, ভারতবর্ষ **जाहा तृत्य । छात्रजन्ध तृत्यः नामात मह्मा दाँनि,** আঁণারের মধ্যে মালো, তাপের মধ্যে শীতলতা, শৃক্তভার মধ্যে পূর্ণত। চাই। একটি প্রাকাশ্ত তৃণস্তৃপের मत्भा व्या कि कि । शिष्टल छारा तमन शुष्टिका गांग, (भर्डे क्रथ नितानन्त्र एथत मत्भा जानत्नार्गदत ক্ষণিকা পড়িলে ভাহা উড়িয়া যায় । ভাই এ বিষম ছ্:পের দিনে উৎসদের কাশ্ডারণা, ভাই এ ছু:খী ভার-ছকে কংশেকের মত হুপो • कतिवात • कना है ज উৎগ্রসাপার সূচনা। উৎস্ব ক্ষ্তিন পাষাণ ভেদ করিয়া। खतल करलत छेश्म छेश्मातिख कतिशा (मश ।

এখন উৎযাপতত্ত্ব একটু ছারিক্ষুট করিছে ছইবে।
উৎসব ব্যাপারটি বৃথিতে হইবে। ভূমুল আনন্দ রোল,
ভীত্র উৎসাহ, নানাবিধ সামগ্রীর আরোজন, বিষম
আমোদ আহলাদ আদি মিলাইয়া দে একটা ব্যাপার,
ভাহাকেই বলে উৎসব। স্থলকণার আনন্দ প্রকাশের
নামই উৎসব। আমরা বাহিরের যে সমস্ত কার্য্যে

ষ্যাপৃত হট, ভৎসমস্তই ভিভারের বিকাশ। ভিতরে বে ক্রিয়া অকুরিত হয়—যে বৃতি পজাইয়া উঠে, বহিজগতে ভাহা ফুটিয়া বাহির্হয় । ইহা স্বাভাবিক নিয়ম। ভিতরে ফুল ফুটিলে বাহিরে ভগন্ধ আণনিই ছুটিতে থাকে। ভিতরে জ্বস্ত অগ্নি সঞ্চিত থাকিবে ৰাহিনে ভাগার ভাপ অকুভব হইয়া থাকে । ভিতরে है। मित्रामित्व वाहितात वमता छ। हा धका निङ इत्, প্রাণের ভিতরে অ্থাপুত্র হটতে থাকিলে বাহিরে পুলকোদ্গমাদিরপে ভাষা ফুটিয়া উঠে আনন্দ পাকিলে ভবে ভ বাহিরে আনন্দ-थकान क्रम डेरमन रहेएक मारत र किस्तु भागारमत उथ कि ? आश्रास्त्र मः मात्रभावनायमञ्जीयमञ् অপ্রস্থান চট্ডে ছুংখের চিতাধ্য অবিরভট উল্গীর্ণ হটভেছে। সুলদৃষ্টিতে অংপাততঃ ইহা বোণ হয় সটে, মার ও গভীর গর্ছে ডুবিয়া, স্মার ও লেখ, ভ্রমের ভ্রম্পার্ড। ব্রিভে পাণিবে, (माथर छ गाहेर्त अयः माना कक्ष्मभीत अछ

নিক্রিণী শীতণ দলিল ধরেরে এবাহিত माहेट उट्हा (प्रविद्ध भाहेत, मनः थान वृद्धित अजीख चान १हेटळ ८०मन ८गहे योजनात वल विशा चामिरएटहार करणत क्य (कान कुश धवन क्रिएक धातुष्ठ रहे, **उथन यमान्तर मभरा धार्मम (म**ब्लिए शाहे, বালুকা স্তুপ কেবল উপ্তিত থাকে, পরে কেবল কর্মন-ता निरु ८० थिए । रेक श्वरमण পाই ना १ किञ्च ७४न ७ व्यायता निकाम घटना। नामुका কর্দির ভেদ করিয়া আরও তলাইয়া যথা পুঁড়িছে পাকি, দুর •ইতেও দুরতম প্রেশ পর্যান্ত স্থন উল্ভিন্ন कतिया एकति, जभन वाक्षिज मन्याता (भणिएक भाहे। (गइ ऋभ भन्नोत मन चानि खुत् भन्नगत काम উपछित्र कतिया यथन (प्रीयन, छश्चे है (गई छन-পেশে তিত্র গানল নিকাপন মান**লে** ও প্ত পত্রণবকে দেখিয়া চরিতার্থ ২ইতে পারিব । কুপথননের পুলম भगगरत (मिश (कनल है वि एक नालि। (म किश भनीतानि किया ध्रम करत मामता (तिभ् (करत हे कु.भ् अलिकान

ভাগ কেবলই বিশুক ভাব। কৃপখননের বিতীয় অবসরে দেশি কর্দিন, অর্থাৎ ময়লা মাটি মাখা কতটা জলীয় ভাগ। সেই রূপ মন আদি বিভীয় স্তরে দেখিতে পাই ছঃখমাখা হপ। যখন শেষ স্তর ভেদ করিতে পারিব ভখনই কৃপের নির্দান জল ধারার ভায় আলার অনব্তিষ্ক আনক্ষ ধারা। দেখিয়া পরিত্থ হইতে পারিব। তাই বলিয়াতি, তলাইয়া দেখ ভিতরে আনক্ষ বিদ্যান রহিয়াছে।

ভোমার একটি পুত্র জন্ম গ্রহণ করিলে তুসি স্থাই হঙ্, আবার সেই প্রিয় পুত্রের অভাব হইলে তুমি দুঃশিত হও কেন ? পুত্রের ভূমিষ্ঠ হইণার পুনের তাহার সহিত ত ভোমার জানা গুনা ছিলনা, কোন পরিচয়ইত ছিল না। তাহার সহিত কোন চিঠি পত্র লেখা লেখি ছিল না। স্তরাং পুত্র ভোমার গৃহে আগস্তুক। আজ একজন আগস্তুক ভোমার গৃহে যদি আসে, আবার চলিয়া যায়, তাহার জন্ম ভূমি যেমন স্থী বা দুঃখী হঙ্না, সেই রূপ আগস্তুক পুত্রের জন্ম বা মরণে ভোমার হ্র্থী বা দুঃখী হওয়া উচিত নহে। কিন্ত का 🗝 ५ वर्ष करें, जानस्करकत करा है स्थ मृत्य रहें।। या एक । পুত্রের শরীরটিকে আমর। ঠিক ভাল বাসি না। পুত্রের শরীরটিকে ভাল বাসিলে ভাহার পরিকর্তনে আমাদের দ্ঃথ হইত। বালক পুত্র যথন যুবা হয়, আবার পুত্র যথন বৃদ্ধ হয়, তথন যৌবনাবস্থায় বালক পুত্র মরিয়া যায়, বৃদ্ধাবস্থায় আবার যুবা পুত্রও ত মরিয়া যায় কৈ তাহার জাখ ত আমাদের দুঃখ হয় মত্রাং শরীর রূপ পুত্র আমাদের ভালঝসার নহে। আমরা পুত্রের তেমন জিনিষ্টিকেই ভাল বাসি. যাহার গৃহিত কখনও আমাদের পরিচয় নাই, জানা खना नाहे. (महे चक्रांना चरहना वस्तर कि कानि कि কুচকে আমরা আবদ্ধ, ভাষাকে না ভাল বাসিয়া बाकिएक शांति ना । शूरखंत भातीत्रिएक है गांति छान বাসিতাম, তাহা হইলে পাঠশালায় গুরু মহাশয় লেখা পড়া শিখাইবার জন্য পুত্রের শরীরে আঘাত করিলে আমাণের দুঃখ হইত। কিন্তু তাহা ত হয় না । কেননা

তথ্য মন বৃদ্ধি রূপ পুত্রকে ভাল বাসি। পুত্র যদি দেখা পড়া না শেখে, বৃদ্ধিদীন মুখ হয়, ত তেখন পুত্ৰ বাঁচিয়া। কি ? প্রকরং ভগন শরীর ছাড়িয়া মন রূপ পুরের ভাগবাস।র গজি হয়। কেননা ভ্রথন মনে হয়, শ্রীর রূপ পুত্র শুকু মহাশ্য কন্ত্র ক নির্গ।তিত চইলেও দন রূপ পুত্র ভ চপুষ্ট স্তাশিক্ষিত হইতেছে। ইগতেই **ভগন আ**নসদ হয়। আগোর লেখা পড়া শিপিয়াও मिन चानुकेटभारम मुर्नीिक भारतासम २ हेसा मुख्छे मुताञ्चा • ইয়া উঠে, ত তেমন্ পুত্রকে আমরা চাহি না। জখন भाषात्रश श्वारक है जान गाम । मनीज মলিনভায় সে শাসা রূপ পূজ কলুমিত হটলে মর্গ্রেদনা উপস্থিত হয় 💢 প্রত্যাং আমাদের করিয়া 'ধীরে ২ কেন্ডাভিনুখী হইয়া অন্ত:ন্তরের দিকেই ছুটিভে পাকে । একটা গুরুভার শিওকে আকাশের দিকে উঠাইয়া দাৰ্ দূর ২ নভো-भश्य (छन कतिहा (म हिल्या माछिक, तम अन्छ हेस्रुक <u>প্রাস্তরে পিণ্ড কিন্তু পাকিতে পারিবে না। পুলিবীর দিকে</u>

পুনরায় তাহাকে প্রত্যাবত্তন করিতেই চটবে। পুথিবীর चाक्ष्मी मिक्कि र्य जाशात्क छ। निरुक्त, स्वताः जाहात পুণিবীর সহিত ভালবাদাম্যী গতি নিম্নাভিমুণী না হইয়া থাকিতে পারে না। ঘোর উক্তা হইতে নিম্নতার निर्¢ हे ভालनामा (भोष्या शारक। वाहित **१३**८७ ভিতরের দিকেই ভালবাসা ছুটিয়া থাকে। হুত্রাং ভाলশাসার গতি অন্তর্ভিদিনী। ভাই পুল্লের বাহিরের भतौतामि त्रभ खत (जम कतिया जानवामा **इडे. इ. इ. इ. १८ कार्य कार्य** ভাগিয়া অনস্ত পেমানুধির অতল তলে ভালবামা कलाहर कारा। जालवामा जाहात है शिराजात स्मीगक्ष शाहेशा शाकृष्टे इस मिनि शख्युत्ल नाम कतिर १ रहन । যাতা লিয়া, ভাষা প্রথময় । ভাই শাস্ত্র বলিয়াছেন म। जा जानम प्रतथ।

্শংসাবের তাপ ছঃখ গাছা কিছু, সমগ্রই আমাতে। (এখানে মন বৃদ্ধি রূপ মাগেকে লগ্য করিয়াই একণা বলিতেছি, আল্লাকে লক্ষ্য করিয়া নতে) তাথ দুংখ

আজে মনের এই দুউটি অংশ মুছিয়া পেলে পুজেব জন্ম মরণে আর হুণ ছঃথ অতুভব হইছে পারে ন। ম্ব দু:ব বাহিরের পদার্থের ধর্ম ইইড, ত।হ। ইইলে क क है अनार्थ क क नगरम छ श्रमम ञ्रा मभर्ग ্যথন মান্ব সংসারী গুহুত থাকে তখন विनागगग अमार्थ क इ इस रगाय আবার যধ্ন বৈরাগী সন্নাদী হয়, তখন সেই অনুভব করিয়া ভাগে করে नगरा यादा जा बन्न इइंड जन्म मगरा ভाशा ज বিভ্যা জিখিল কেন ? এক সময়ে নে অগি ভাপ অন্য সময়ে তাহাতে কি. শীতলতা পাওয়া যায় ? নাকি অগ্নির ধন্ম, তাই অগ্নি দির্দিনই তাপ্ময়, হুধ वा मुःथ (गई तभा शमार्थित धर्म यमि इहेड, छाहा ছিইলে একই বস্তু চির দিনই স্থাময় ব! ছু:খময় হই ছ । কিন্তু ভাহাত হয় না। স্তরাং স্থ চুঃখ মনের অৰন্থ। যথ্ন মানৰ সংসারী থাকে, তথ্ন মনের যে

ভাব, বৈরাণ্য অবসায় দে ভাব প্রিবর্তিত চইয়া যায়। मः नाती अवसाय भागत (य श्री जिम्रा काः भ छ ए हिशा (नश् रेन ताशानकाश जाहा छ है। हैशा नहेशा भारक। एक मःभाव कीर्न कक्षाल नलिया (नाम इस्र । ন্তভ্যাণ তথ জংখু প্রীতি সংগীতি, সমুনাগ ও ছেষ মিত্রতা ও শক্তর। ম্যুক্ত মান্বের মুনে। ভির্কাল যাহাকে শক্ত বলিয়া জানি, বিজয়া দশনীর পবিত্র खेरमत्त कारारक अध्यानिस्र मिया शाकि ।। যদি বাক্তিগত ধর্ম হই ন ভাষা ১ইলে বিক্য়া দশ্মীর দিনে " শক্রু " আবার " মিত্র " হইল কেমন করিয়া প আমার মনে মে শত্রেভা ছিল, ভাচা নাকি বিজয়া मभभीत शनित्व भक्ति गृहिसा शिशाहः छोडे (श्राम-ভরে শক্রকে মিত্র করিয়। লউলাম । প্রভরাং উৎসা শক্রকে সিত্র করে নিবিড নিরানলে প্রসন্নতা আনিয়া (मश । উৎभव कुछक् का कान् करत, बरुठ कारक गरह कन करत, भारतिक छञ्चल करत, कौनरक उडकीग्राम करत, भूनर्रक भून ७ अञ्चानयूक्टरक ध्यञानयूक कतिशा (पता। ष्टेश्मरवत्र शक्ति षान्त्रद्या ও षनिनार्या ।

ত্ব দু:শাদি সমস্তই জীবের ভিতরে त्रविद्यार्ष्ट्र। नाहिरत छथ अस्यमन कतिए इहेटन ना। जित्र शब्दकति (य छथछम। विमामान, ज। शिक् কাগ্রন্ত করিতে পারিলে আর ভাবনা কি ? গু:পাননাশের চেটা রুগা, ভিতর হইতে দ:শমুল फेर्लाहिक कतिएक ना लातित्य महात्र भिक्क कहेत्व না। প্রম কার্য়ণিক ভগণান গমস্তুই আসাদের অস্তরে নিচিত্ত করিয়াটেন, আমানের অন্তর্ভাগুর ভরপুর করিয়া ता विशाहक । किरमत खना जामा किमरक शत्रम्थार भकी इडे(१ १डे(१ अभि। (भन्न निष्मत मर्गाम। निष्मत है कार्ड সাছে। গার্ণর ক্রেনেরলের লেভিতে গদি বদিবার অণিকার না পাও তাহাতে তোমার অম্যাদা 奪 ভোমার যে হাদ্য-দর্বারে অন্তর্যামী রাজ্রাজেশ্বর नाम कतिराज्यका, रशहे प्रतनारतत प्रतनाती कीन जुनि, **ट्यामात मर्गामात जानमा किरमत १ गाहिरतत न्याभारत** ভোষরা দীন দুঃশী পরপণানত সুশিত ভুজ্জাতি, গুভরাং क्षमन जनकार उरमन कतिनात करा नाई बर्टे. किइ

ভিত্রের বিকে ভাকাটলে অধ্যাত্মরাকোর দিকে তাকাইলে উৎসৰ সম্বন্ধে মানৰ আশা'ষ্ত হইতে वाहिरतत मःगात क्रःथभग পরিত্যাগ করিয়া অন্ত:করণ রাজো প্রবেশ করিলে সেণানেও দেখিতে গাই, তু:গাম ভাত হুখের লীলা, কিন্তু তাহা অপেকা আরও নিল্ল তলে নামিলে (पिशिष्ड भाडे, विनि मत्नेत मन् अञ्चलत अञ्चल, धार्मत वान, हेस्रियात हेस्सिया. त्महे चलीस्त्र तमनला निष्ठा অবের লহরীলীলায় সদা ভাসমান । তাঁণারই স্থের অতিকায়া পাইয়া মনে স্থাভাগ আসিয়াছে, সেই স্থাৰ্থ্যের কিরণর।শির অভিনিম্ব মাত্র পাইয়া পাতত দু:গপুর্ণ রগৎ ই।দির স্থনির্মল শুল মৃতি দেখিতে পাইয়াছে। স্ভরাং ধদি উৎপব করিতে হয়, ত ঠাছাকে लहेशा। ভातत्रवर्ष ठाँशास्त्र जूलिया क्थन छ छ रमन করে নাই। ভারতের প্রত্যেক উৎসৰ সেই আধাাত্মিক সত্তের তারে ২ গাঁপা। ভারতের ভিতর ভাগ সহে। ২-স্বস্য। মণেৰে ভাগারই ছারা ভাষারই সেরিও বাহিরে

অ(সিয়া সংসারকে স্থাতিল করিয়া থাকে । ধনা জীব তাঁহারাই, গাঁহারা এই বিফু পাদোদ্যে মহোৎসম-গঙ্গায় অবগাহন করিয়া কুতার্থ হইয়া থাকেন।

🥆 অসত্বাদী অস্তু পদার্থ ছাড়া কোন আত্মশক্তির অন্তিত্ত সীকার করেন না। তাঁহার মতটি এই থানে একটু সমালোচনা করিতে চাই। জড়বাদীও স্বীকার कतिर्वन, जाभारणत मन्युरन रय भणार्थताकि तिहसारह এই পদার্পের সরূপ আমাদের চক্ষর গোচরীভত হয় না, বস্ত্রকে থামর। দেশিতে পাই না। বস্তুকে অবশ্রহন कतिशा (म तिल रा ना भक्छ। (म बाक्री व्यनश्र (म লম্বাই চোড়াই আদি গুণ গুলিপাকে ভাহ কেই স্বামরা দেপিতে পাই। হতেরাং বস্তন উপলব্ধি হয় না, ৰস্তার 👩ণ ৰা শক্তির সহিত্ত কার্যাকেতে আমাদের দেখা গুলা कामाण পরিচয় ছইয়া থাকে। এই শক্তিকেই আমরা आपित कात्रा भाकि। भवार्थिक आपत कि वा। भिना प्रति भरिष्ठ भाषारातत गाकार त्यांन अस्याकन

নাই। তোমার জ্ব হট্যাছে, কুট্নাট্ন রূপ ঔষণ্কে

চাও কেননা জ্বন্নতা শক্তি তাহাতে আছে। আজ ছুরন্ধতা শক্তি কুইনাইন হইতে যাদ শিলুপ্ত হয়, इदेश्य (म क् ने ना देन (जागात शरण थात थामरतत माम औ । কুইনাইনের জ্রযুত। শক্তিকেই ত্মি वाम । श्वेमनालाम धेमन भानक नित्वत श्वाछन इहेल ত। । (क्लिशा (नग्न (क्निन) जाना मास्कि । लिशा यात्र । মতনাং জগৎ শক্তিরই উপাগক—শক্তিরই সেশক कि छाड़ा शमार्थ अशमार्थ— शावछना বাহিরের আবরণ পরিকাগে করিয়া এই ক্ষন্ত:শক্তির भिरक मुखिभाक कतिरक श्रेट्र। वाशितः त्र गहल (अस ्य अक्षत् महत्व श्रामातम् ज्ञान निमागान निधारहरू । य जन्म तत्र जिम्होती (प्रवृक्ष) निक् जात्ना कतिशा निताक किति एए हम छ। शत ल्टल भारत लाई एक इंडेर्स । (मुडे ट्लाका ह्ला करिला फ চাক্তরণ স্থাগিল্ব হইতে উচ্চলিত চইয়া আলম্প্রবাহ की १ कि जार्मित कुःभ ६ हे एक निष्ठात करते। मिन्तुत निन्तू भाद्य व्यादन कौनन कू कार्य इड़ेसा सास ।

णाभता वाषातरक ठाइ (कन. वात्मा मांकि वार्ष् विनिया। इक्षा कि कि नीन (कन ! इक्षा " तम " निक्षे বলিয়া। অ।মাদের শরীবাদি যেন ইক্ষুদ্ত স্বরূপ, ভার আছে। ইংলে লগ স্থাপ। তাই আগত বলিয়াছেন, " इत्मा देनमः ''। अहे त्रामत आचाम (य मिन कीव कति ए भातिरन, स्मेरे भिन छाहात हित्रभिरात नीत्रम भीतन मतम करेशा या है (त) आहे जान तमत खालान ছইতে যে দিন অপস্থার উৎস্নি:স্ত হট্যা আসিবে সে দিন গে, আনপধারায় শিশুব্রসাও আপ্লাণিত হইয়া সংসারের হুধ আপাততঃ হুধ বলিয়া বোধ **रप्त नरहे, किस्त भतिनास्य जाहारल क्रः यहे** छेर भन्न इहेगा थादक । माः मातिक छत्भत्र छेनश् कारम शून्य मृद्धि **इत्र। ऋ(अत्र क्रि.) मृह्य म्हा अक:-**গিল্প কথা। দংপের দুংখন স্মৃতি না হটলে ভণের स्था प्राप्त करे कहें (ज शारत ना । (कनना स्थ प्रार्थ भवन्भात यूपारणकी । छाउतार रम मृर्थत छेनरस পরিণামে দৃঃধ্ কেবল ভোগকালে বিদ্যুত্তর ন্যায়

অকুভূত হট্যা যাহা অবদান হয়, তেমন সূপ সৃথই ্যাহার ক্রিয়াভে সূথ, পরিণামে সৃথ, জোগ করিবার সময় গাছাতে জ্থাবরফ যেখন জলময়, সেই রূপ যাতা অখনয় সেই বস্তু পাটবার ক্ষয়ই কীৰ लालाशिक। व्यार्थाकाकि भग्नात्क राष्ट्रे स्ट्यंत्र व्यानम् चित कतिहा ताथिशाट्य । भथन পুरुष क्राम्मीत खेशनाम ऋश स्थानार्यात च्यूडीय करतन् ज्येन वाहिरतत्र स्थारक ६४ छ भन्न कतिर्छ शास्त्र, खेशनारम जाहात करते इडेरज्य । किस धर्मचाक शुक्तन তাহাতে কট অমুভব করেন না, ডিনি ভাবেন, আজ কি ওঁগোর পক্ষে শুভদিন, যে ভিনি এট রূপ দশ্রকার্যা कतिनात चनमत शाहेशाइन्। अडे छ'भने हिसारा তাঁছার শস্তরাড়া। সানন্দিত খ্য়। দর্গেৎস্পের সময় বিনয়াকর। ধর্মন ব্রাজাণ ভৌজন করান, তথ্ন হয়ত मगन्त्र भिर्मत मर्गा । उँ। इति । ॥ क है कल अक्न कतिनां ब ইচার দর্শ ভাঁতার ও কিছু মাত্র ्या। नतः धाति। एकत् (अञ्चन या। शास्त्र

8 2 উথির মনে এক অভূত পুর্বব আনক্ষের সঞ্চার হয়, তিনি দে থানক্ষে ভরপুর হইয়া উঠেন। এই যে একাদশী ও আহ্মণ ভোজন রূপ ক্রিয়া, এই ক্রিয়া कितिनात ममश्र स्था व्याचात आहे क्रियात शतिनारम হুৰ, অৰ্থাৎ তাদৃশ ক্ৰিয়া জনিত পুণ্য দারা স্বর্গাদলাভ হয়, দেই স্বর্গন্ধ ভোগ করিবার দ্যায় স্থ্য স্তরাং ইহ। ছ্ৰম্য। এ হুৰের উপর হুৰ দুঃখ্যাৰ। মলিম মনো-রাজ্যের কোন ক্লপ আধিপত্য নাই, ইহা আধাাগ্লিক বিজস্থ, তাই ইং। স্থময়। এই রূপ ক্রেণির জপকেই হিন্দু তথ পলিয়া বুঝেন, তাই ভাঁহার ১০৯ পাথিৰ স্থম উপোক্ষত। হিন্দুর প্রভোক দল্ম কল্ম এই क्त श द्वर्थभग्न किन्तु अनु ग्हेरनार्य वर्ष्ट्यभाग भन्न कन्या ५ छ। न-প্রশালী দুমিত হইয়া পড়িয়াছে। তাই শব্মকায়া করিবার मञ्चस (लाहक कम्डेडे अक्रू⊛व कांत्रा शादक । У,পুনেরই বলিয়।ছি, আত্মরূপ ভথসূযোর কিরণ রাশির মতে পাইয়াট মনোরাজো স্থের অংশ আনিয়াছে। অহতিও স্পান্ত।করে বলিয়াছেন-

ি আনেল্ময়ে হায়া, এণ্ডেগ আনেল্ড সংঅয়েশজীবাও সংকা আনলাং "

যাহার নকল পাইয়া এত তথ, সেই আসল জিনিষ্টিকে পাইলে না জানি কত প্ৰথ হয়: কিন্তু ভাহায় ज्ञ अ भागानियुद्ध की रनत (b को इस ना। निभाक्षण जी छ-कार्त क्रि मीर्ड बडाय शैं छिड रहेगाह, शाक्ः कार्त শীতে থর ২ করিয়া কাঁপিতেছ বিছানা ইইভে উঠিতে ইচ্ছা হইভেচে না। বিভানাতে ৰণিয়াই ওমি বদি (तोज (পाहाहे(छ পा ७, छर्त (छाभात नष् न्यानम हत्र, রোদ্রে তোমার শাত নি'মহ জড়তা কাটিতে পারে । এই আন্তারক ইচ্ছার স্পাতী হট্যা ভাস জানালা পুলিয়া রা'ঝ্যাছ, আশা আছে, কানালার ভিজর দিয়া সৃষ্ট্রেশ্ম সাসিয়া ভোমার গায়ে পড়িবে, ভোমার नीजार्ड कड (महरक) कपार्व कतिया छिल्टन । मुर्धात भाग मामुख्या ह का नाला (शाला पारक তবে ত রশ্যির।শি কানালার ভিতরে প্রবেশ করিবে। সুধার রশ্মি আসিতেছে এক দিকে, আর কানালা

(थाला पाटक यनि बर्गाम क, छत्य अभ तोस छश्राखांश कतित्य (क्थन कतिशा ! अथन अहे पृष्ठी (अत गहिल क्षांहा मिलाहेश (पथ । मःगातत निषाक्र भीए আমির। দ্র্ণাট আর্তি – পীড়িত – তড়। ইচছ। যায়, ঘরে विभिन्ना द्वानुत्यात (तोक्ष (शाहाहेटल) लाहे भनीत ऋश गुरु भन ऋण कार्ना चुलिया ताथि। यिन छथन्या কোতিগাওলময়, তাঁহা চইতেও কিরণ মালা অনিরভ **ठातिमितक विकीर्ग इहेबा शांदक, एटन दम मर्यातिमा** অণুভ্ৰ করিতে পাই না কেন 📍 যে ছেভ মনরপ গৰাক্ষৰারকৈ তাঁথার সমস্ত্রপাতে (মুখে৷ মুখি) कतिया चुलिया ताचित्त कानिना। छाहात कितर्गत धार्य भ'रम अक मिर्क आयारिका कानाना (थाना थार्क मर्जानरक मर्थाः मेंश्मारतत निर्का छ। हे (म কিরণ স্বরূপত: উপভোগ করিতে পাই না। ভাগার अक्षे। कावड्राता शांडे माछ। (म कित्र शांख इडेटन সমাস্ত জড়ত। ামটিয়া যায়, যে বৈদ্যাতিক শক্তি উদ্গীরিত क्हेरल भः भाव विषय् क्रिड । चार्ठ डन भनः श्राण मर्हि छन

इहेगा एटिं, गुर्काश कोना स्मिष्टिक अकनात लाकाहेटन না। কেশল ভাহার প্রতিজ্ঞায়া লইয়াভূমি মলিতে हा अ। मन (किना नकरन पृथिष्ठ हा e. (माना কেলিয়া গিলটিতে মোহিত হইতে চাও, রুণা ফেলিয়া রাং লইগা নুষ্য করিতে চাও, ভাগতে প্রকৃত সুধ भारेत तकन १ हल्ला था भागनिनी कृष्मिनी है। तस्त কাছেট স্থার ভিথারিনী হইয়া থাকে, তাহারই দিকে मङ्ख पृष्टित जाका है।। पारक । हाँ भित्र (प व्यक्तिक खाला अर्फ् जागत काट्य (म शार्षक (वर्ण मैं। जात ना, (मडे क्रथ छश्युमा यक्ति हाहिएड इस् डर्न कीन! Cकाशात कानुशंगनकल (स (माइन हस्त्रात मूल् मधुन मिराऋहोत्र ५० जानिङ ३३**८७**८७ अक्नात **डाँ**शत मिर्क काका ५ ! (अडे शूर्वन्युत निमल माधुरीत भातास (स निन अक्षकाइन कतिएक भातिएन, एम मिन आत एकामात ভাবনা কিলের ? দে আগণায়িক জগতের প্রতিছবি এ ব্যক্তিগতে হুপের আশা করিও না।

পুৰেট প্ৰভিপন হইয়াছে, ছংগী জীবকে ভখী

क्रनाडं एएमर्तत व्यत्नात्रमा। कीत्र क्रम्सनाडं দঃথে নিষয়, কেননা দুঃগের ভাগই ক্লগতে বেশী । आहे मृ: (अत की अह। लाचन कतिनात अन्तरहे शर्मा » छेरमव थार्याकन । পूका भवर्य सहियाहे किन्तुत छेरमव । अग्राना (नर्भन छेर्भन (कर्म भार्थित भ्रम्भित करेगा বিশাস বিভবের সাস্থ্রী লাইয়া কিন্তু হিন্দুর উৎস্ব তাঁহাকে লট্য়া। উৎসবে এমন ব্যাপার সমূহ অফুচ্চিত হুর বাহাতে সালাসম মনেও প্রার্কী কালে পুর্বার সময়ে য়খন শঞ্জ্বন্টা বাজিয়া উঠে, ধুপের নোগদ ছুটিয়া উঠে, আরতির দীপমালা ছলিয়া উঠে, कथन निमधं भर्ग ७ औ जित मकात इस । प्रान्त वाशा দু:গী জীবের অভি তাকাইয়াই অন্তর্জগতের व्याभाजिक हाता सहेताहे छेश्मरवत वावचा कतिया গিয়াছেন। তিনি যে আনক্ষাগরে ডুবিয়াছিলেন, যে तनमागरत आज्ञहाता इहेगाहित्यन, कीवत्क त्महे इट्थ इथी कतिबात बनाहे छेटमन ऋभ आनम्मश সদাব্রতের ব্যবস্থা করিয়। গিয়াছেন। তিনি যে 💖 🕏

ভাওার-খাও ইউটে স্থাপানে বিভোর ইইয়াছিলেন, ্যাস্থাব্যের মুছে। ৎস্বে মাতিয়াছিলেন্ কেবল একাকীই ভাষা ভিনি উপভোগ করেন নাই, দীন জগতের জন্য সেই গুল গৃহের দার উদ্ঘাটিত করিয়া গিয়াছেন। কেননা ভি'ন দে দয়ালু। ভানি ভোমার বিপুল সম্পৃত্তি মাছে । কিন্তু তোমার সে বিপুল সম্পত্তির কণিকা মাত্রেও যদি আমার মত দীন দুঃপার উপকারেনা মাদে, ভবে ভূমি আমার কাছে ধনী কিলের १ আথ। ঋণি যে সাধের ধন প।ইয়াভিলেন তাহা জগতে বিলাইয়া গিয়াছেন, কেননা অতুল দয়া তাঁছার, ভाই अ मृश्यीत्मत करा डाहात आ। का किशा किला ভাঁছরে দয়া না হইলে কলিকুলুগদূষিত আমাদের ন্যায় মায়ামুগ্ধ জীবের গতি ≢ইত না।

সংগা ক্রিলে গেমন একটা ফল পাওরা মার,
অনেক সময় স্বরং ক্রিয়ানা করিলেও সেই ফল দেখিলে
ভিতরে তদসুরূপ ক্রিয়া হয়। একটা দৃষ্টান্ত দেখ,
ভোমার ভিতরে দৃঃখের ক্রিয়া হইলে বাহিরে ভাহার

कल काबा ऋ(भ धाका निज इस, इंश (स्था (तथा सास, (महे क्रथ हेराड (क्था गाप्त, जामात चिलत मृ: १४त क्रिया ना रहेत्वल अभारतत कांचा दर्भाषत्त अभारतत মলিন মুখে অশ্রুষারা বাহতে দেখিলে তোমারও দু:পের উল্লেক হয়, তোমারও মুথে কালা ত্মিক্রত বেশ আনক্ষে আছ, কিন্তু ত্মি দেই भनदार्ड यनि अगन अन्हों पुःर्यत मछनोत मर्गा शिक्षा भड़, द्रयथात्म नृःत्यत आर्डनाम छाड़ा आत दकान कथा नाहे, कामा काड़ा आत त्कान बालात नाहे. তেমন খানে ভূমিও নিজে না কাঁদিয়া পাকিতে পার ना। वहे तथ दर्भन छ र्थत है। गित ह्:हा एवत गरभर পড়িলেও ভাম मृश्मी इहेरल । इतिमधा शांकर छ शांतिरा न।। ञ्डतार व्यादात क्रियात कन दमिया। **ट्यांगात ७ ७७८त किया इत्र । (य उंदग्रव मण्डा**न मिलिशा जानम करव, रमहे जानमग्रधनीत मर्धा **পড়িংল ভূমি जमान**ृःशी रूखना (कन, । प्र मुहूरखन জন্য ত্মি জান্দাংশের ভাগী না হইলা থাকিতে

পার না, স্কুতরাং উৎসব নিরানন্দের সহিত সংগ্রাম করিয়া তাহাকে পরাভৃত করে। উৎসবের তেজে নিরানন্দ দুরে চলিয়া যায়। অত এব এ দৃঃখপুর্ণ সংসারে উৎসব চাই। যদি উৎসব না থাকিত, ভাহা इडेटन अ मः मात मऋकृषि इडेंछ । উৎमन्डे मः मात्र क वाँठाहेशा तथिशाष्ट्र, छेट्मवहे अन्नरक चिकिनीन कतिया ताथियारह। छेट्मव न। थाकिरन मृ: थनरज्जत অবিরক্ত পিটপেষ্টে সংসার ভন্নীভূত হইরা ুকে।থায় উডিয়া ঘাইত। উৎসব শ্মশানে জীবনী শক্তির বিকাশ করে। মরুভূমে অমুতের নদী প্রবাহিত করে। পাষাণে অমৃত বল্লরীকে অঙ্কুরিত করে। তাই উৎসব জীবের পক্ষে বড় প্রিয় পদার্থ। হিন্দু উৎদর্বের শক্তি বুবিতেন, তাই बामभ गारम बामभ शर्क्टारमर वत विधान कति ॥ (इन । हिन्दूর উৎসবের দুইটি পৃষ্ঠ আছে, একটি বাহিরের, व्यथति छि छ दत्तत । वाश्टितत भिक् भिया (निथिभ द्वाध इस आरमान आइलाव कतियात खना है। अक बाशात মাত্র। ভিতরের দিকু দিয়া দেখিলে বুঝিতে পারি ইহা

কেবল দাধনার স্তর। প্রকৃত স্থাশকক যেমন টিয়া পাথির
মত পুঁথির বুলি অভ্যাদ না করাইয়া প্রাকৃতিক পদার্থ
পুঞ্জ হইতেই শিশুকে শিক্ষিত করিয়া ভূলেন, দেই রূপ
আর্য্য খাবি এই প্রাকৃতিক উৎদবের ভিতর দিয়া জীবশিশুকে গভীর দাধনার ভব্তকথার ইঙ্গিত করিয়াছেন।
স্থাত্রাং হিন্দুর উৎদব কেবলই কাল্পনিক নছে। ছেলে
খেলা নহে, কিন্তু প্রকৃতির নিয়মরেখায় বিজড্তি। স্গাধ
দাধনার তার ইহার ভিতর অবঞ্ঠিত। উৎদবতারের স্তর
উদ্ঘাটন করিয়া আমর। ভাহা ক্রমে ২ দেখাইতেছি।

নৈশাথের নিদারুণ গ্রীয়ে যথন সকলেই পীড়িত হইয়া উঠে, সৃষ্যদেব অগ্নির কোয়ারার মত যথন প্রচণ্ড রৌজ বর্ষণ করিছে গাকেন, তথন সে তাপশক্তির তীব্রভায় শীতলভা শকি নিতান্ত অভিভূত হইয়া যার, কীব নিতান্ত ক্লিন্ট হইয়া পড়ে। এই বিষম সন্তাপময় সময়ে হিম্মু বিভাপভারিণী গঙ্গাদেশীর আরাধনা করেন। শীতকালে গঙ্গাপুকার বিধি নাই, কেননা তথন প্রয়োজন নাই। পতিভোজারিণী মা গঙ্গা শীতলভার

व्यक्षिष्ठाको (मन्छा, छ। इ. निमास्यत छीत्रन छाएन हिन्सू তাঁহার চরণ তলে শরণ লয়। গঙ্গাপুদার পর কগন্ধাথের স্নানযাত্র। [জ্ঞান] গঙ্গার পুত বারিতে জগন্ধাথ দেব ি আ রা। বিশেষিত হইরা মলিন তাব জ্জিত হটরা মখন म्राष्ट्र इहेशा छेर्राजन ज्यन हे डीशात मर्भन शावशा यात्र. তাই স্নান্যাত্রার উৎপব। জ্ঞানের নির্মাল ক্রেটাডতে অজ্ঞানান্ধকার বিদূরিত হইলে আলু দাকাৎকার তাই স্নানগাত্রার পর রণযাত্র। শরীর রূপ রুথে জগদার্থ क्रभ जाजात मर्भ न इडेरल भूनर्जना शास्त ना । (तशकः বামনং দৃষ্ট্। পুনৰ্জন্ম ন বিদ্যতে) কেবল তাঁহাকে দুৰ্শ ন করিলে তপ্তি হয় না। আদরের সামগ্রীকে নিজৰ कतिएक ना भारेत्न आग भून्किक रहा ना। कारे मानक মা মশোদার নাায় জন্মান্টমীর দিনে তাঁহাকে পুত্ররূপে প্রাপ্ত হইয়া কোলে করিয়া সোহাগ করিবার অবকাশ পান। অঞ্চলের নিধি সাধের ধনকে বুকে রাখিয়া তাপিত শীতল করেন। শরতের শারদীয়া (मवडात ভাঁহার সাধের

दमिथिशा भारकत। जिल्लामात ताकतारक पती मा उथन ত্রিজগতের মাহইয়। অপরূপ রূপ ভরঙ্গ লীলায় দিগন্ত প্রান্তর উদ্ভাসিত করিয়া ব্যাপক রূপে আবিভূতি হন। তাঁহার সে পূর্ণ মৃতি দেখিবার জনা প্রকৃতি নবনধর বেশে সঞ্জিত হইয়া উঠেন। বর্যার বারিধারায় স্নাত হইরা পবিত্র ভাবে তাঁহাকে ণেধিৰার জন্য প্রকৃতি ধেন উদ্গ্রীণ হইয়া উঠেন। তাঁহার প্রকাশে শারদীয় নির্মাল আকাশ উজ্জ্ব চন্দ্র ভারকায় ম্পাজ্জিত হয়, শনের তরু মনের মত হুচারু হুরভি কুম্ম দামে তাঁহার পূঞা করে। শিশির বিন্দু রাশি মণি মুক্তার নাায় ভূণশ্যাময় ভূতল উজ্জ্ব করিয়া দের। মাকে দেখিশার জন্য যেন ত্রিলোক হাঁদিতে ভাদিতে থাকে। हं मामाना महिमाञ्चतक वेथ कतियात सना महिम-মৰ্দিনী মায়েৰ এত আড়মর কেন ? অভিমান রূপ শস্র অভিভয়ক্ষর। ছোর সমাণিকালেও অভিধান বিন্ত হয় না। ভখন সংখ্ৰহং এ অভিসান কোথ। व्हेर्ड यात्रिया जूटि। वेदारक नगुरत उर्वाहिं कतिवात

জন্যই মহাশক্তির এ আড়হ "। রাণণ রূপ विनक्षे कतिवात जनाहे तामहस्त वहे मक्तित कतिशाहित्तन। महत्य कमत्त उँ। हात हत्र । कमन করিয়া ছিলেন। সুযুদ্ধা মার্গে কুল কুওলিনীকে উল্ছোলন कतिया माधक महत्वातितम जाँहोक छेशामना कतियाः हित्तन। ভाরতে यमि अ इंट्मा ना आगिल छ। हा हरेता এমন শবিত্র ভাবমধ্র আনক্ষোলাসের मगाक हित्रितित कना विधिष्ठ हरेख। ভाরতের পরম দোভাগ্য যে এই রূপ উৎসবের মুগ দেখিতে পাইয়াছে। অমাৰাস্তার ঘোর অন্ধকারে জীব যথন অন্ধী ভূত, নিদ্রার গভীর সাগরে জীব যখন নিমগ্ন তখন এহাপ্ত জাবকে লাগ্রত ও প্রবৃদ্ধ করিবার ক্ষরাই ভাক্তরনপালিকা করালা কালিক। মুগুমালিক। মুর্ত্তির আবির্জাব। ভারতের ঘোর অক্ষতমদাচ্ছন্ন তুর্দিনে নীর্ব শ্রাণানকেতে হতচেত্তন ভারতকে ভাম हे ভরণ নির্ঘোষে কাথাত করিবার জন্যই तनतत्त्र नुडाकानी गाहिशा थाटकन। श्रामा कृषे वस्त्र-গণের পকেই ভীমা, কালী অহার গণের পকেই বিকরাল-

नमना, किन्नु ভক्ত गर्भत शरक वाज्यानाशिनी। অপনের কাছে বিভীষণ হিংস্র কন্ত হইতে পারে, কিন্তু নিকের শিশুর পকে সেমা সেই রূপ শ্রামা নিক ভক্ত শিশুর পকে স্নেহ্ময়ী জননী। নৃদিংহমুর্ত্তি দৃষ্ট হিরণ্য কশিপুর পক্ষে করাল কুতাস্ক,কিন্তু ভক্ত প্রহলাদের কাছে তিনি ভক্তবাঞ্চাকলভরু—স্মেহের অনন্ত শ্রহ্রবণ। শ্রামা আবার হাঁসিতে ২ শাস্তিম্যী জগদ্ধাতী মূর্ত্তিতে দেখা দেন। প্রবৃদ্ধ জীৰকে আনন্দিত করিবার জন্যই সংহারিনী ম্ত্রির পর তাঁহার এ কুগদ্ধাত্রী অর্থাৎ জগদ্ধারিণী মৃতি। অনন্তর দুকালের বল বিধান জন্য জিডে। স্ক্রেয় काखितका मृति । हिंन चानिष्ट्रं हन। तामनीना। अथात्न जिल्ला (श्रमाकारत भतिग्र इहेग्रा দাধককে দাধিকা দাল।ইয়া তাহার দৃহিত সাম্মিলত করিয়া দেন। অনাদ্যা একুতি চৈতনোর সহিত অভিध कार्य गिलिशा माहा। आजाभिका गामिका जान तिक রুদেখরের বসময় তরঙ্গে গা ভাসাইয়া দেন। এই মিলনের পর আনক্ষলহরী প্রাপ্ত হওয়া চাই,প্রেমের পর খোমানক্ষ

উপভোগ করা চাই তাই রাসলীলার পর বীণানাদিনী वाग्नामिनी व्यानिया वमस अञ्ज छम्रवाधन कतिया रामन । कता वमरस्त मनम मक्रक हिल्लाम (धारमालाम्मत जाव মথন জাগ্রাভ ছইরা উঠে দেই সময়েই দোলযাতার वावचा। जामलीलाश (कवल मिलर्गत वालात, (पान-याकाश (कवन मिननानम प्रेशस्थातंत्र गाभात । छाहे चावित्तत इड़ाइड़ि, चानत्मत घड़ल कल्लाल। हैराहै माधनात हत्रभावचा । अहे (कामन खिल (यारम যাহার কিছু হয় না, সালনতা বিশুদ্ধতায় হৃদয় যাহার আচ্ছন্ন, ভাছারই পক্ষে হঠযোগাদির কঠোর বিধি বিছিত इहेगाएए। छाटे मन्तरणस ४५० भूजात वायम।। नाक ফোড়া পিঠ ফেঁড়ে। কলে ডুবিয়া থাক। আদি ব্যাপার अहे भूकात अत्र । अन्मश्व क्षे त्यात्मत व्यक्तिता माख । শক্তকণে বৃঝিলাম ভারতের সমস্ত উৎসণ্ট আ**ধ্যা**ত্মিক সূত্রে গাঁখা। এখন অনেকে বলিতে পারেন এত গুলি शांकिए जावाव अ श्रामकात छेरमन (कन १ अ নৃত্র উৎসবের সৃষ্টি হটল কেন ? একধার উত্তর আমরী। निटंड हारे।

পুরেব যে গণস্ত উৎসব উল্লেখ করিয়।ছি, ভাহাতে भाग हाउँ, त्यांग हाउँ, शुक्तः शार्व हाइ, निश्चमण्ड कर्या-কাণ্ডের মহর্তান চাই। হুত্রাং তাহাতে শক্তি সামর্থ্যের প্রয়োজন। আমরা কলিযুগের নিডান্ত মন্দ অধিকারী শক্তিহীন জীব, আমাদের পক্ষে এমন উৎসব চাই, যাহা শক্তিহীন হইয়াও করিতে পারি । তাই এ নামের উৎসব'আমানের পক্ষে উপযুক্ত উৎসব। আমি কর্মা কাণ্ডত্যাগ করিতে বলিতেছি না আমার বলিবার অভিপ্রায় এই যে আমাদের মত চুর্বল অধিকারীর শক্ষে अहे नारभाष्मन हे यहकामित्र माधना, (कनना डेहारक भाकि वारतत अर्गाकन रहेरव ना। चामता मीन छःशी शाशत কাঙ্গাল, অর্ণ ব্যয় করিয়া উৎসব করিতে পারিব । (म छेरमन निःश्चम इहेग्रां कतिराज शास्त्र, শামরা ভাহাই চাই। আমাদের মত দীন তু:খীর প্রতি कुला कतिहा है महालुक्षमण अहै नात्मारम् वत वानका कतिशार्कन। खनामि (मर्राग (स नामगाया गान कति-बात क्रम लामीशिज, (महे नाम कीईन कतिबात बनकाम

পাইয়াছি, হুতরাং আমরাধন্ত। যোগীন্দ্র পুরুষ যে নাম ञ्चभा भाग कतिरुक्त भहारमाधनिक्षा । स्व छ छ ह है सा मान, त्म नारमत छे पत्त माजिए शांत्रशाहि, हेरा सामारमत পক্ষে পরম দৌভাগ্যের কথা। পাতক মহাপাতকাদি रिय ज्ञानात्नत नाम छेक्ठांतन मार्ट्य निमृति छ इस, रमहे क्रम्पानिधान ज्ञानात्मत अपनाम अनिनात क्रम् कें।शत মহিমা কপন জন্ম তাঁহার ভাবে তাঁহার নামে মাভিবার জন্ম তাঁহার খেমে বিভোর হইয়। ঠাহাকে মন: খাণে ধারণা করিবার কন্য গভার এই মহোৎগবের অণভারণ।। ঠাছার নাম প্রেমভরে উচ্চারিত হইলে স্বর্গ মর্ত্ত রদাতল স্থলীতল हर। जांक जाञ्च मकरल क्या की वन मकल कतिवात कना थांग ভतिशा निल्, इति इति दनाल । दगन गकन कार्यात शांतर्छ माना । वनमार्ग विलय्क शांति इति হরি বোল। বেন ভিতরে বাহিরে তাহারট সন্ত। সমুভ্র कतिया काय मरनावाका निलाउ शांति इति इति (नाल ।

अ भाखिः भाखिः भाखिः वृतिः e

নিজ নিকেতন যাতা।

দুঃধী হইতে ধনী পৰ্যান্ত ভিখানী হইতে সন্ত্ৰাট পৰ্য্যন্ত ा उत्र मकरलाई हेळात भाम—कञ्चनात मान्। मित्रिक दश्यन निष २ कझनात विविध विदेखत (गोन्मर्स्य विश्वां, महाताक ठकावलीं ७ तमहे ताल विश्वा । उठिक মাশা, উচ্চ আকাঞ্জা, প্রিয়ত্ম বস্তু পাইবার পিপাগা অগতের প্রবেরই সমান। এ মংশে কাহারও সহিত কোন ভারতমানাই, ভারতমা কেবল গাম্থ্য লইয়া অধিকার লইয়া। ফুটন্ত ফুলের রাাশ তোমার উদ্যানে শোভাগ উপলিয়া ভঠিতেছে। ফুলের মনোমুগ্ধকরী भाषुतीत धाताश भीन পाध्यकत ठिल द्यमन विमुद्ध इश, कूल लहेवात जना डाहात आए वामना (यमन जाणिया উঠে, তুমি বাগানের মালিক, তোমারও ফুল লইবার জন্য তেমনই সাধ যায়। কিন্তু তারতম্য এই, তোমার माम পूर्तिगात छेणास चाट्ह. (कनना वाजान

निक्कत व्याधकुछ । मीन श्रिक्त (म मञ्जावना नाहे. তাহার মনের আশা মনেই বিলীন হয়, অন্তরের পিপাসা श्रास्त्र कृतिशा यात्र । धनीत विलाम खार्ग धनीत है क (इतिशा विधिकात । निर्धानत (म मिरक अमरक्रम করিবার যো নাই। তাই ধনীর অধিকারে পথের ভिश्राती यनि विनिष्ठ गाग्न, जाहा हहेत्स धनी 'डांहाटक छ। छ।। मिर्क । द्वन । अकछ। अझ महन इटेरक छ। এক জন পথিক সমাাসী দেশ প্রাটন করিতে ২ উপ-ননে পিয়া উপস্থিত হইলেন। ওঁ। হার শরীর কান্ত হইয়া পড়িয়াছে। বনের চারিদিক ঘুরিয়া ভিনি ভাতায় थुँ किए नागितन, थूँ किए । जन खना । गाना न অট্টালিক। তিনি দেখিতে পাইলেন। সেই অট্টালিকাটি अक्षम नवाटवत विलाममस्मित्। चहुनिकात कात दमर्भ গিয়া সন্ন্যাসী দেখিলেন্ সন্মুণে প্রকাণ্ড সভামগুপে এক স্থানজন রত্নগচিত সিংহাসন রহিয়াছে। সিংহা-সন শূন্য, কেছই ভাছাতে বসিয়া নাই । সিংহাসনের हातिनिक विम्या भातियनवर्ग (यन

कतिराउद्ध। मन्नाभी जात काल निमन्न कतिरमन ना किছ ना नित्रा अकराति नरवर्ग गिरा সিংহাসনে বসিয়া পড়িলেন। সভান্ত পারিষদ্গণ অবাক্। এমন সময় নবাৰ আসিয়া পৌছিলেন। নবাৰ ফকীরের কাত দেখিয়া বলিলেন, এ আসন আপনার বসিবার कना नग्र। हेट्। ताक मि:हामन, आयात्रहे बना। एकीत नितिन इंश (जानात चानन (क नित ? अ चान পাস্থপালা, এ আসন পণিকের বিশ্রাস করিবার জন্য। है हा (य देलाभात है ज्यानन व निनम् ध्यमान कि ? बाका नित्निन बामात পिতৃ পিতামহ গণ এ वागन व्यक्तित कतिया गामिटल्डिन, यामित वालाकांत हरेटल हेहा অধিকার করিয়া আসিতেছি। স্বতরাং ইহা আমার रेगाक। क्षकित बांसालन, रमहे बनाहे रछ। बांसर्छाइ, এ অ।সন পথিকের। তোমার পিত পিতামহ গণ এ আসন वरमत व्यापकात कात्रशा हालाशा शिशाट्यन, ন। হয় আরও বিশ বৎসর ইহ। অধিকার করিয়া (काथाम हिलाम याहेरन । चामिल रमहे ऋभ

দ্চার ঘণ্টা অধিকার করিয়া চলিয়া যাইব। তুদশ বৎসর **षिकारतत कना हैहा এछ দिन " (छाभात " हहेर**छ भारत. आत कुठात घण्डा अधिकारतत निमिक हेरा এতকণের জন্ত " আমার " হইবে না কেন ? ভূমিও প্রিক, আমিও প্রিক। নবাব নিরুত্র। ফ্কীর আরও বলিলেন তোমার পিতৃ পিতামহ গণ ইহাতে কিছু দিন काठे।इसारहन, कृषित ना इस किहू मिन काठे।इरव. আমিও গেই রূপ না হয় কিছু ক্ষণ কাটাইয়া লুইলাম। ভূমি, আমি চলিয়া গেলে আবার কেহ আসিয়াঁ এ পাছ-শালায় কিছ দিন কাটাইবে। হৃতরাং ইহাকে তৃমি এক বাবেই "আমার" বলিয়া বুঝিয়াছ কেন ? ভাহাই প্রকৃত "আমার ", যাকাকে অধনও ছাড়িতে ছইবে না যাভার সহিত কখনও বিচেছদ হইবে না ৰস্ত্রই অস্থেষণ করা উচিত। ফকিরের ভাষার আমর।● कारा है विलाख हो है। अन स अभार धत अने स शर्भ म विषात्रण गःभात गर्न कास्त्राद्य আসরা चार्राञ्चक । चात्रारम्ब चव वाष्ट्रि नवछ हे शाख्याना । कृत्रम पिटनत कना व भाष्ट्रणालाश विद्यागं भूनर्यक संवकार्या সাধন করিয়া নিজ নিকেতনে যাইবার জন্য সম্বল বা माभन महेर्ड हहेर्य। ज भाद्रभावाश क्रिक विद्याग कतिया हित्रविधाम जवरनत भर्ग गहिए इंडेरन । थारन (शरल कांत क्षितिराजः इस ना. (शशरन (शरल भागात " e " आगि " विनिया नगल है " नाभिगय " হইয়। যায়, ভাহাই আমাদের "নিজ নিকেতন " 🔀। জামাদের নিজ নিকেতন নহে। ইহা আমাদের ध्यवानत्कार्क । खान्ति वर्णकः नःनात्तत छेलत च। यिव রূপ একটা আবরণ রচনা করিয়াছি। তাই " খামার সংগার আমার ঘর বাড়ি, আমার জিনিদ পত্র " বলিয়। মনে করি। যাহ। আমার জিনিষ, তাহা আমার সহিত हित अनिष्ठित्र थाका हाई। मःनात यनि জিনিষ " হইত, তাহা হইলে তাহার সহিত আমাদের क्थन । विरुद्ध पछि न। मःगात वाभिवात शृद्ध সংসাদ্যের সহিত আমাদের কোন সম্বন্ধ ছিল না, মরিয়া গেলেও বর্তমান সংসারের সহিত কোন সম্বন্ধ থাকিবে

ম্বভরাং অভি অল্ল সময়ের জন্য যাহার সহিত সম্বন্ধ, তাহা কি আমার জিনিষ হইতে পারে ৭ যাহা আমার সহিত নিত্যনিয়ত বিদামান তাহাই আমার অবিদ্যাবশত: हे সংসারকে " আমার " বলিয়া मत्न कतियाहि, जाहे जोशात्म छाड़िएक करें हम । "আমার জিনিম" তাহার উপর আমাদের মমতা বদিয়া যায়।ছেলে পিলে ঘরকরা জী शतिवात ममछ है " जा मिद्र मांथा " विताहि जा मार्मत প্রিয়-এত রমণীয়। জগতের গে পদার্থ আদিছের কিরুণে প্রতিভাত তাহাই আমার লোভনীয়। त्य भनार्थ चामिरङ् मनन्त्र त्य भतिमार् चार्छ তাহা দেই পরিমাণেই আমার ঘনিষ্ঠ। আমিছের ना थाकिल कगरं करे যাহা আমিহ্যাপা যাহা নিজ্যু তাহা ভুচ্ছ হইলেও ভাহাই তাহার পক্ষে থ্রেয় बह्रोनिका পড़िता (भित्त जाँहात (मनन हु:स হয়, নিঃসম্বল দীনের কুক্তে পর্ণকৃটির পড়িয়া

ভাষার তেমনই মনোবেদনা উপস্থিত ভাহার পক্ষে ভাহা নিজস্ব। সমাট্রাজস্হারাইয়া বেমন মাতন। অকুভব করেন, । ভিক্সুকের একটি ফুটো ঘটি হারাইরা গেলে সেই ক্লা ছু:খ তাহার উপস্থিত गभताक द्वा भोगाम र्खि वीरतस (क्थतीत प्रकृ रहेत्न (म मःबौद्य द्वामात (य कृ: भ ना इप्त, दर्जामात अक्षि थाना देहत्तत कान जल अक्षे অহুধ হইলে ভাহা অপেকা গভীর ছঃধ সাগরে ডবিয়া যাও। কেননা ভাছা ভোমার " নিজ সামগ্রী ''। বাল্য काल इंडेएड भीरत २ वरतात्रकितं गत्त्र २ भिका ७ गत्त्रत श्रद्ध अहे जामिच कार्तित विचात हता। भार्यक " आभात " विनित्ता वृत्या,- भारत शिकारक, जर পরে প্রতিবেশীকে, কৃট্য আত্মীয় স্বজন বন্ধু বাদ্ধৰকে নিল্প '' বলিরা বুবো। তদনস্তর যৌবনে স্ত্রী পরি-ৰার পুত্র পৌত্রাদিকে তাপনার বলিয়া অভুরাগ করে। **এই ज़**श चांत्रिष कारनत क्रिक विकास इत াৰিছ '' আসাদের অবিতে ১ সক্ষার ২ প্রতি স্নায়

শিরার অধু পরমাণুতে বিজড়িত। পা পতিয়ি এত বেমন প্রস্তার ভলদেশ (ভদ কবিয়: বন্ধ্যাল হয়, গেট রূপ " चामिष्ठ " नहातीत मृत्रातन शाभारतत भगः धान **बदुयन (छम क**तिसा bितासा शिवा एक । धा भाष-निक्रांक जामता छेठ। है। छ जनमर्थ। কীণ শক্তি " লামিড় জ্ঞানের "নিকটে পরাভূত হইয়া তাহারই পদতলে বিলুগিত হয়। কানি "আমিছ" शतिकाश कतिरक शांतिर न नौन अशी हरा, कानि "जहः মমেতি" জান বিণক্ষিত হটতে পারিলে পরিমা নির্ভি হয়, কিন্তু আসার মত গায়াসমতাণিমোহিত মাদলি প্রাণ কীবের পক্ষে তাহ। মাকাশকুম্বন। মানিম विकुष्ठ कतिहा ल**हे** (७ पा वे । जागिए व বেমন হুপ্লাসিংছের বিশ্বশাল-বিজ্ঞাতিতে ভেমন্ট आर्मिट्यत क्लिजर में भागता निक्रिक कतिहा लहेन 🕅 भः नाद्वत कृत्य गं ७८७ व्यानक ना इरेग्रा व्यामिक स्मिन বিশ্বপতির খনস্ত্রণার বিলীন হইবে-- মলে নিপতিত

বিন্দু সাজে তৈবলৈর নায়ে ভাবং পদার্থে ব্যাপিয়া বাজবে, সংসারের ক্ষুদ্র পিঞ্জর পরিহার করিয়া আমিছ সেদিন পরম বিভুর চরণাকাশে উড্টায়মান হউবে, শেই দিনই আমিছের পূর্ণ পরিণতি। সেই দিনই ভাহার চির সমাধি হইবে । শ

পুর্বেট বলিয়াচি, যাতা সামার নিজ সম্পত্তি ভাষা নড় মধুর, বড় স্থানর। জিলা২ করিয়া সংগ্রাহ পুর্বেক ভিলোভয়ার অপুৰৰ সৌন্দব্য মাধুরী যেমন বিরচিত হইয়াছে, নেট রূপ জগতের মাহা কিছু ললিভ, যাহা কিছুকমনীয় যাহা কিছু মনোমোহন, সে সমজের भात मर्त्राच गमछि १ फ इहेश " आभात " किनिय (सन উদ্ভাগিত হইয়। উঠে। हर हे : 'आगात" कथांपि अभिटि মিক্ বলিতে মিষ্ট ভাবিতেও মিষ্ট। মাহা সামার, खाइ।है त्य जाजात शाक छहुम, जर्षाद विकंकाती, অথবা যাহা উপকারী, তাহাই আমার প্রিয় কিনা, এ সমস্ত ভবকৰা এখন বিচার করিশার অবসর আসার याहै। आमि तम अख कन वित्रा आमिताय, खाशाव

जार्थशा अड (म. बाझाटक bafha দলিয়া ব্রিয়া আগিয়াছি, তাহার কুছকে আমরা মলিয়া যাই, ভাষার আসলিতে আমরা ভবিয়া গাই। ভাহার গুণাগুণের দিকে তাকাই না। তাহার শোভন भार्मा छत्नत नित्क कारकश कांत्र मा, खार्यत जक्षीना স্রোভ সেই কেন্দ্র স্থলের দিকে ধানিভ হয়। জগতের চক্ষে ভাহা স্থিত ০উক ভুচ্ছ হউক, অন্তরের টান किन्तु कि कानि (कन (महे मितक की खत्नार्ग शताहिन्छ হয়। কলিকাভা হইতে কোন স্তুর্বভী পল্লীগ্রামে ভোমার হয়ত নিকগৃহ। কলিকাভায় কার্য্যোপলকে তুমি প্রবাস করিতেছ। কলিকাতা অতি হুন্দর অতি সমৃদ্ধি শালী কল্মী। ক্রলিকাডার চকে তোমার ক্ষাভূমি পল্লীগ্রাম নিতান্ত কলগা খান হইতে পারে, किञ्च (जामात हाक (जामात श्रेती ग्राम वर्ग हरेए । गतीतान्। दकनना (छामात निटकत निटक्छन विमायान । छाइ निलास्त्रत नन्तन कानन कतिकांछात्र পাকিয়াও অন্মর পাইনেই বাড়ি ঘাইবার বাসনা

गात প्रार्थ काशिया छ हो। किल को जात भाष ताभित के ऋत **ं ज्उरत लीला कतिलाख (म मभरखत** লোমার নিজ নিকেতনের গপ্ত মাধুরী কি জানি কেন পিয়। ৬৻ঠ। নিজসামগ্রীর এমনই মাহাল্য এমনই কুংকিনী আকর্ষণী শক্তি ছাছে। তোমার নিঞ্জ-লেগার আগিত্ব ভোষার স্থানেশের সহিত কলিকাতা অপেকা নাকি বহুদিন হটাতে বহুপরিমাণে বিল্লভিত, काठे कार्यात शक्ति (कामात कड मात्र। काडे वाष्ट्रित जना अंक वास्त्रा। वाक्सतीती कीरवत বহির্কগতের বাডির প্রভি বেমন মাগ্রহ, সেই রূপ जासुःभातीती अञ्चतास्थान् निका निर्माणका याहेगात भारतभाषा जारत किया। कतिरहरहा किञ्च खांखि नभकः गाहारक कीन निरंकत नाष्ट्रि नुविशा जालनागिश (कि.निशाष्ट्र, ७। ह। ठ भाष्ट्रभाला। धानात गाहा वाखनिक है थाय, यादः (क निरकत किनिय जानिसा **डे**डिंड वित्रा भाख निर्देश कतिशाह्म, (प्र

नित्क ज मांग गाहे (७ ठाटिना। मनः मान ज तम भएपत পথিক হইতে চাহে না। স্বতরাং এ বিজ্ঞাটের উপায় f ?

শাস্ত্র বলিভেছেন ভগবানের নির্মালধামট কীব। ভোগার শান্তিময় নিজানকেতন। ভগবানই ভোমার প্রকৃত অংক্রীয়। তাঁহাকে লাভ করিতে পারিলৈ পর্য यथ थाल क्टेर्न। मास्त्रत ६ क्यारा भनः लाग किन्न সায় দিতে শীঘ্র সাহ্য করে না। বিক্রতিময় চেত্তে কেবল সন্দেহের তরঙ্গুট উঠিতে থাকে। ঈশ্বরকে আপত **९३(ल छ्थ ला ७ १**श. धक्षाश यागात मिलन यक्षः कर्रा প্রতিধ্বনি করে কৈ ? বরং বিপরীত ভাবনার উদয় চইয়া পাকে। একটা গ্রহ্ম বলিয়া সে বিপরীত ভাবনার मभर्षन कतिर उद्घि। दिनान बच्छि अस्तान भागात्मत चाठात वानशत (मिश्रात कना .बक डेगान-भासाश [शार्ता भारतः] भिग्ना छेशिष इस् । जिस् भागनः (मत ती कि नी क हान हलन (मिथा। (न्हाहे (क.

अभन गमग्र अक्टा भागन डाँगाटक काटक छ। किशः

বিশ্বতাস। করিল, মহাশায় আমার একটি গুছু খাল আছে। অনুগ্রহ করিয়া উত্তর দিবেন কি ?

७ जत्नाक । कि वात्रा, वन ।

র্পিগল। লোকে বলিটা থাকে, নিজায় হ্র্য লাভ ইয়া আমি কিন্তু কথাটা ব্যুক্তে পারি না। আপনার মত কি ?

ভদ্লোক। আমার আবার মত কি ? নিদ্রায় স্থ হয়, ইহাত ঠিক কথা, তালা গুমি বুঝিতে পার না, এই জনাই ত লোকে ভোষায় শাগল বলে।

পাগল। আছে। আমি নাহয় পাগল। আপনি ভ পাগল নহেন, কথাটা আমায় বুঝাইয়া দিন দেখি, নিয়োৱ কোন্সময়ে তুগুহুয়। ুক্

ভ দ্লোক। কেন, ম্পনই নিদ্রা আদে তখনই ত তখনে।ধ হয়।

পাগল। কোন খিয় বস্তু পাইবার সময়ে যভক্ষণ পর্যান্ত যে বস্তুটি সম্পূর্ণ রূপে না পাওয়া মাইভেছে, ভ্রক্তন মনে একটা আকুলি বিকুলিই ক্যাতে পাকে, বিধা বস্তু পাইবার আশাধ মনে উংকণ্ঠাই চইতে থাকে, ইহা বোধ হয় আপেনিও সীকার করিবেন । স্তরাং নিজা ঘলি স্থাবের দামগ্রী হয়, তবে সেই প্রিম বস্তার সমাগ্র নাহওয়া পার্যন্ত চিত্ত ত ব্যাকুলই থাকে, অভ্যাব তথ্ন প্রশাহর বিশ্বম করিয়া ?

্ভদ্লোক। আচছা নিজার আগমন সময়ে স্থান। হউক, নিজা আসিয়া গেলেত তথ পাইতে পারি। নিজার উপভোগ কালেত স্থাপুভ্গ সম্বা

পাণিল। ভাষাই বা কেমন করিয়া হইওঁত পারে । নিজার সময়ে ত পুমি গাট সুষুখিতে 'গভিত্ত পাক, তোমার মনঃ আণ ইচ্ছিয়ে সমস্ট ত সে সময়ে আচেওন পাকে, অভরাং তথন সুধাস্ভ্য ধয় কেমন করিয়া !

ভদ্রলোক। তবে বৌধ হয় নিদ্রা ডক্ষের সময় স্থ হয়।

পাগল। নিজা ধলি প্রিয়বস্ত ইণ, তবে ভাছার বিচেহদে জ্ব হইবে এ কেমন কথা ? প্রিয় বিচেহদে জঃখই হইগা পাকে। প্রিয় বস্তুর বিরহে জ্বখ হয়, ইছা ভ পাগণেই বালতে পারে। এখন ভাব্ন দেখি, আপান পাগল, কি খামি পাগল।

ভদ্রলোকটি নিরুত্তর। তথা পাগল আবার বলিল, নিরার কি আগখন সময়ে কি উপভোগ কালে কি ভঙ্গে কেন্ শুমধ্যে যে হুখ লাভ হয় তাহাতো বুঝিলাম না। নিরাতে হুখ হয় ইহা আখার নিশ্বাস হয় না। আমার ভো এই মত। আখার এই মতের গহিত সাধারণ জগতের মত মিলেনা, ভাই ভাহারা আখাকে পাগল বলে। তেমনি আখার মতের গহিত ভাহাদের মত মিলেনা, হুভরাং আমিও ভাহাদিগকে পাগল বলিভে পারি। জগতের সক্রেই বন্ধ পাগল।

পাগলের মনে সেমন মানকা, ছবিয়াছিল, ফামানের
মন্ত পাগলের মনেও সেই রূপ ঈশ্বর দহকে খানক।
উপন্ধিত হল লাজ বলিতেতেন ঈশ্বর হাপ্তিতে হথ
লাভ হয়, কিন্তু কোন শময়ে হথ হয় ভাগত বৃথিতে
পারি না। ঈশ্বর রূপ পরম প্রিয় বস্তু শম্পেনের মসরে
প্রিয়বস্তু পাইবার মালায় উৎকঠাময়ী একরকম

ব্যাক্লতা চিত্রে ঘিরিয়া ফেলে। স্বতরাং সে সময়ে णाश्चि (काथारा : बानात जेनत्त मनन धाथ इहेलान, তথন তাঁহার অনম্ভ চিদেকরণগাগরে আমার ডুবিয়া যায়। সে মকুল পাথারের ভীর তরকে আমার আমির স্বতন্ত্র শক্তির হার। হইয়া কোপায় ভাগিয়া চলিয়া যায়। আমিছ তখন মরিয়া যায়। স্করাং तम् (म मास्त्रि ज्यन देश(भाग करित्य तक ? भूतिवि है প্রজিপন করিয়াছি, " যাহার গহিত " আমিছের সক্ষ আছে, তাহাকেই গামরা ভাল বাণি, তার্হি মামানের भएक दिशा शनार्थः क्रेब्रातत कार्ड् यागारमत यागिष যথন স্থির হটয়া দাঁড়াইটেট পারেনা, তখন সামিত্রের স্কিত ভাষার সৃষ্ধ থাকিল কৈ ? জুত্রাং ঈশ্রকে जायात किनिम " जीनिस्में जात वागिए आति देक ? ভালবাসার রাজে (स आभिक श्राधान गचल, नेपातत क्लम किल्शिक्टोस পूड़िया खाशा गथन कात्रथा व है त्य. ७ थन ঈषतरक " बाजी। " विनम्ना जानित । भाति देक १ ञ्डताः, भाख ड निश्निन, कौर ! क्रेश्तरे ट्राभात

अभिश उंशिदक्ष जान नाम: !कन्न आसारमन अरवीय मन ७ छार। मानिए । । र ना । जामता मूर्य विल वर्षे डीशांक जानामि, किन्न जागां क कार्यन क्या नरहा ভালবাসরে গাত একদিকেই ছুটিয়া খাকে। আমাদের ভালবাসা যাদ ঈশ্বরে স্মাপ্ত হইত, তাহা হইলে श्वनतात्र जाश्व मः भारतत । मर्क शाविक एस (कन ? व्याभारित अन्तरात (अभिनिश्हामान मःभाततक यम।हेसा কোলয়াছি ভাতরং তিনি তথায় প্রিশেন কেন ? नर्माभात क्रिमिक्नों हे ग्याम किलिनिन करत. ताक्रतारकचत जनाश कि निवाक कांतरल शारतम ? क्रशनालात फेत-স্তব্য সাধুরীচভটায় মগ্র হট্যা গলি টাছাকেই মনঃ-প্রাণে ভাল বাসিতে পারিতাম, তুরে খার স্ত্রীরণের দিকে আগাক্তর কুদৃষ্টি নিকেপ করিতে পারি छात्र कि १ तकांते श्राप्त च चतेन। मत्न इडेएड(इ भूतभ कुन्मती (१ भारा भगतीत अप शार्**ष** (१ भक्षांस স্ঞ্জিত হট্যা রূপের সাধুরী চুড়াইভেছে, এমন স্ময় क्रम পাवक भाष काशात मृत्युत्य बाभिया পড़ित्यम ।

বেশ্যাটিকে একবার প্রাণ ভাগর। দেখিয়াই সাধু কাঁদিতে খাগিলেন। তাহার ৪টিচকুদিয়া অঞ্গায়া বহিতে লাগিল। বেশ্যা ভাবিল বোধ হয় তাহারই কোন অপ-नार्य मन्त्राह्छ ६३॥ मार्य कै। निर्छ्छ। कत्राधि वालल खाला কাঁদিতেছেন আমি যদি কোন আপনার নিকট অপরাধ করিয়াপাকি তবে সংজ্ঞান করুন মা! ভূমি আমরি কোন অনিফ কর নাই, সামি ভাহার ক্ষত্র কাদিতোছ না। ভোমার ঐ গণরূপ क्रिय ना नगुलहतीत मीला निनाम (मधिया का मात मरम कडेल (म (भोन्म(शांत आभात कडेएक निन्धुभाः कर्ति ड इडेशा भः भारतन अहे नामाचा ताल জানি সে আশার কিওঁ খুধর কত জ্বনর। সেই এনস্ত (म)मर्गात मान्तर्क ब्रज्ञाम (पांथर्ड शहिलाम नः সন্মবেণনার আকুল হইয়া কাঁদিভে!ছ খাকুত ভক্ত, যিনি ভাঁহার ভালনাসায়

্যাহ। মর্থাকণা, ভাচা পুরেবট বলিয়াছি। আমরা ভাষিত্র লটমাট বিব্রক্ত। যে কিনিষ্টিকে মাসার निलगा भाषा कि कति एक शाति. छाठा ना हेगा है आगता द्यशी हडेर्ड हाडे। आभारतत आधिक मध्यारतत महिल व्यपिक शतिभार्य कछ। हेश। शिशोर्ष्ट जाहे जैं। हात तास्का যাইতে ভীত হয়। সংসারের গণৰ কানন হইতে লামিছ नल्लीत मत्नार्थाहेन कतिशा अभवात्नत (टारमाप्रात्न তাভাকে রোপণ করিতে হটগে। সেট দেশের অমৃত मिल यथन छ। इति यल (मार्म गिक्षिक इहेरन, त्महे শেশের বসন্ত বায়ু যথন ভাতার বিশুদ্ধ শাখা পল্লবের छेपात निराम्धी (तर धारा विक् इवेटन जबन (भवे जा भिद्र-लकाम (म पूष्ण धन्क हिं क कहेरन, जाहात (भीशरक मिनस चारमाभित व्हेशा क्रिति, क्रिने छतिशा माहित क्ष धतित् जाहात छत्ति खिड्या शतिवृध हहेता । न्नर्ताक व्हेट्ड (प्रवर्ण चामिया (म क्ट्लेब (भीतक খাত্রাণ করিয়া বিমো'ছভ ছউবেন। সে ফল কেবল तम जता, जीवाटक अभन वीस नाहे (म चानात मःमादत

পতিত হইয়।পুনর।বৃত্তির সূচন। করিবে। এ ফলে সমস্ত ফলকামনাই নিঃশেণ হইয়। যায়।

পুরেব ই বলিয়াভি, আমির ১ইডেই ভালবাসার উৎপত্তি। কিন্তু এই আসিছেই নপন ভালবাসার পরিণতি হইবে তথনই তাহ। আদর্শ ইয়া দাঁডাইবে। ভেদবৃদ্ধির গর্ভে ভালবাদার কমা কিন্তু অভেদবাধার ভাগারে পূর্ণিমার চন্দ্রমার মত যে দিন ভালবাদা পরি भूके इडेबा फॅटिटन, (भेर्ड मिन्डे डाशांत हरसाएकर्स । দৈজবৃদ্ধি ভালবাদার ভিত্তি রচন। করেন, কিন্তু ছালেড-वृद्धि (स निम निकटकार्ष प्रतिस। (महे भानवामात পার্থিন দেহে স্বর্গীয় ভেক্ষের সঞ্চার ক'রয়া দিবেন সেই দিন ভালবাস। মৃতিকু সোপান চইয়া দাঁড়াইবে। ভাল e जाल नागात खेणार्जामा श्राम अ गिन जात बारमन कड़े जिमाता मिलिया (य निम कक माताय अवाहिल চটবে তিনটি মিলিয়া দে দিন একটিতে মিশিবে, মেই विगर्वे छाल्यामात भूर्व शर्मायमाग । अख्वाः अख्वारे छाल-সংসার লক্ষা এট কনা রাধা জীকুষের সভিত অভিন

শীকুষ্ণ ও রাধান সহিত আভন্ন। রাদা আবার প্রেমের সহিত আভন্ন, এই জন্য তিনি থেমম্যা। শীকুষ্ণ প্রেমের সহিত অভিন্ন, এই জন্য তিনি থেমম্যা। ক্লীর ও ক্লীরের পুতৃল যেমন অভিন পদার্থ, সেই রূপ প্রেম ও প্রেমের পুতৃলী রাধাও একই পদার্থ। এই রূপ আমি, আমার জিনিষ ও আমার জিনিষের প্রতি ভালবাস। এই ত্রিহু মিলিয়া যে দিন একত্বে পরিণত হইবে, সেই ত্রিহেনী সঙ্গমে জীব যে বিন অবসাহন করিতে পারিবে, সেই দিনই তাহার আল্লা চরিতার্থ হইবে।

"আমার জিনিষ" বৃথিতে হইলে প্রথমত: "আমিকে"

সভস্ত রূপে বৃথা চাই । নিজ নিকেতন বৃথিতে

ইইলে প্রথমত: "নিজ জিনিইটি প্রভিপন্ন করিতে

ইইলে প্রথমত: "নিজ জিনিইটি প্রভিপন্ন করিতে

ইইলে। যেন্ন একটি সালার বিষয়ের উপর পাঁচ
ভাইয়েরই মধিকার মাছে। কিন্তু কে কোন্টুক্র মালিক,
ভাহা মগ্রে প্রমাণিত না ইইলে প্রত্যেকের বিষয়ে সভ্

সাবান্ত ইইলে কেন। স্তরাং সভ্ মাণ্ড করিতে হইলে

সাবো মালিক ঠিক হওয়। চাই। আমার জিনিইটিও

(महे त्रथ माणात विभग्ना । अडे माणात । १५८ शत টুকুজে কোন্" আমি '' শ্রক্ত মালিক, ভাষার তওয়া চাই। যথন কোন স্লচাকু বস্ত্র লইয়া শ্রীরকে আচ্ছাদন করিবার সময় বলি, "আমি কাপড় পরিতেডি" কখন শ্ৰীর " ভাষি"। কেননা শ্রীরে আহং গ্রহাড়ে । মুখন কোন রূপের্ভী যুর্ভীর মুগ্ন হটয়৷ চকুরি নিন্ধ পরি জ্ঞাহটতে চে, তখন িন্দ্রি " ভামি "। এই রূপ আংশন্দ্রিণ দিও ভামি। যথন স্বপ্নে হুখানকু ভব করিতেছি, কিন্তা চিন্তার গভীর সাগ্রে ডুবিয়া স্থাতি, তখন মন্ট্র " আমি " তৃষ্ণায় কাকুল হইয়া ভলিবারণার্থ দেছিভেছি ভথন প্রাণ " জঃমি 👸। আবার যোগানকর্ণ। পান করিবার কন্য মধন ছুটিওেছি তথন আত্মাই সামি। <u>नञ्जामि इहे८७ (गांशानमे शर्गाञ्च</u> " আমার জিনিম' অপাৎ সাজ্জার বিষয়। আর শরীরাদি ভাগার অধিকারী वाभित " मादा निषय, छ। हाट हे स्तिय क्रि न वाभित

নিজপু তাহাতে আখারূপ সামির দাবিদাওয়া নাই ভতরাং খড়েড়াকের ঋদিকার ভিন্ন ২ বিষয়ত ভিন্ন ২ । आक्र कनिएछेत विषया (कार्छ याप रुप्रकार कतिए यान् अत्य जारा त्यमन कानीम-कात्रहर्का, (भई जान मानीतानित खंगाएक। भा विषयातक আলু মাদ " আমার লিনিম " বলিয়া কাডিয়া লটকে मान, छ। हा इहेरल भाइना सूर्यारत छिनि पखनीता। স্কুত্রাং আইনের সূক্ষ্ম কষ্টিপাতরে ক্ষয়। বুবল গেল, व्यक्तित विषय अञ्चल । आगि क्रिश अगिक्ति । us of बाम क्षण किलाम डाइट्सत गरमा (गर्ड भामिह धक्त (अ। छ, (म भामि अनि।() करार्क भाषि. **અલ**. ૯ (૧ અગામ ઋગાોત મુ.ન? કતામ, ૧૬ માલ્ય ৬ ভাবসাতে ন্পাকিন। সেই আলামই ভোৱ (कार्छ, क नातर्छ (म " आभित " भारत कन नाडे, द्वाम नाह, द्वां व नाह, निनाय नाह क्या नाहे, बहेल काहरलत साधु कित भीत शशीत भागरतत गाँध म अने अ

धिन (मनीभामान तिह्यारहन, जिनिहे धक्रज ' আমি "। যে আমি আমাদের অন্তর্জগতে শাস করায় चार्यात्मत मनः थान हेस्त्रित्र डींकात चात्नात्क चात्नाकि छ হইতেছে, যে "আমার" ব্যাপাকভাষ্যী সভার অনন্ত ভ্ৰমাণ্ড ভূবিয়া গিয়াছে, সেই আমিট প্ৰকৃত আমি। অন্ময় প্রাণম্যাদিকোষ হইতে সেই আমিকে य। हिता लहेट इहेट्य । ठम्लक क्यामत शक् यथन भार्थित वाश् खत टलन कतिहा जामारनत जानभरन আবিভূতি হয়, তখন সেই বায়ুম্বর গত কত প্রকার পরমাণু ভাষার সহিত মিশ্রিত হয়, কিন্তু সেই মিশ্রিত পরসাণু হউতে চত্পক গন্ধ যেমন স্বতন্ত্র পদার্থ, সেইরূপ সংসারের পাঁচ মিশালি জিনিষ হইতে আলাকে সতন্ত্র क्राल व्विष्ठ इरेरव। अने भूजात गांचा विक्य खांहारे " आगात किनिन्" । नःनात काचात निकय नेट्ड. কেননা শরীরাণিই ভাহার মালিক, ভাচা প্রসাণিত হট্যাছে । তুত্রাং শ্রীর ইস্রিয়ংদিন সাচা নিজ ধন, ভাহার উপর ভাহাদের ভাল বাসা বা আসক্তি

শবিতে পারে, কিন্তু আন্তার সহিত ভাহার কোন সমন্ত্রনাই। কেননা আন্তান নির্মিণ এই নির্মিণ্ড আন্তার নিজ সামগ্রী। ইহা ছাড়া আন্তার আমার জিনিগ শবিনার আর কিছুনাই। স্থতরাং স্বস্ত্রনথই তাঁহার ভাশবাসার ধন। থৈত জগৎ হইতে উৎপন্ন হইয়া ভালবাসা যখন এই স্বস্ত্রনথ গতহয়, প্রেম, প্রেমের জিনিগ ও যিনি প্রেম করেন এই জিবিগ ভেল মিটিয়া গিয়া প্রাথণ প্রমেয় ও প্রমাতা এই জিত্র বিনষ্ট হইয়া যখন সমন্তই আত্মরভিতে পর্যাবসন্ত্রন, তথনই ভালবাসার চূড়ান্ত আদর্শ। তাই পুর্বের্ব বলিয়াছি অভিনতাই প্রেমের উদ্দেশ্য।

তিত ক্ষণ ধরিয়া নিজ সামগ্রীটি কি, "আমি" পদার্থ
কি, তাহার আলোচনা করিলাম। এখন নিকেতনের
করেথ কি লক্ষণ কি, তাহা প্রতিপাদন করিতে হইবে।
বেখানে আমি ও আমার সমস্তই মিলিয়া আমিয়য় হইয়া
যায়, মেই অবৈতধামই কীবের নিজনিকেতন। যেমন
অগ্রিপিও হইতে নিক্ষালিক রাশি চারিদিকে বিকীর্ণ

हा, (ब्रााजि: ममष्टिमा मुर्या हहेट कितन ताम हेज्य छ: বিকিপ্ত হয়, সেই রূপ সমপ্তিভূত প্রমাত্মণিও হইতে এই ব্যপ্তি জীব।তা সমূহ নিঃস্ত হইগাতে। স্ত্রাং যে কেন্দ্রক হইতে শিচ্যত হইয়া কক ভ্রম্ট লক্ষ্য নক্ষের की वाजा विष्ठतन कतिरहरू, त्मरे क्खायलरे कीर्तत मिल्रालन चल (गहे (मर्गहे जाहात निक्छन। बङ्गिन इहेट्ड (म भागामानित ভূলির। গিরা আমর। আপথে কুপথে ঘুরিতেছি। আমর। वाि हात्राहेशा रमिताि हि नरहे, किन्न वाि हिन्ह यिन काना थारक, छाहा इट्रेंट्स (गर्डे हिट्ट भित्रा शुनतात्र বাড়ি পৌছিতে পারি। চিহ্ন জানা না থাকিলে হারান জিনিসের কিনারা করা ক্রিন। ভূমি গৃহস্ব, ভোমার रम छ अक थानि थाला टार्ति लहेशा शिशाट । श्रुलिय रग ज रगरे वामान चन्न राजतक जागानरक सामत । বিচারক ভোমাকে জিজাস। করিলেন, এ জিনিষটি কি ভোমার ? সেই জিনিষ্টির কোন চিতু যদি তোষার না জানা থাকে, তবে ভূমি কেমন

শপথ করিয়া বলিতে পার সেই জিনিসটি তোমার। ञ्चत्राः रातान किनित्यत हिंदू काना हारे। कृत्र वकि শিশু খেলা কবিদার জন্ম বাডির বাহির হটয়াছে। (भना धुना मात्र कतिया (म गंडि कितिया याहेरल हाम। কিন্তু সৰুৱের গলি ঘুঁজিতে পড়িয়া সে বাডির রাস্তা ভুলিরা গিয়াছে। মা'হানা বাড়িহারা শিশু রাস্তায় ১ कैं। तिया (त्र हा है एक नाशिन। त्रास्त्रात (लाटक खाइ। ट्रिक ক্ষিজ্ঞাল। করিল, ডোমার বাড়ির কিছু চিহু মনে আছে जीरा रहेला जाभाक वाजि लहेता वाहेल णाति। भरवाम भि**खेत घ**ड कि भरत भाकिएक भारत १ रग कैं। मिता विनन खाहात वाड़िएक पतका ष्याभतात थे मरवाग नामह्यत् ह्याश षष्ठानलाञ्च कीय। नगतीर्छ (थल। कतिर्ज चानिशा विषम गलि ঘুঁদিতে পড়িয়া বাড়ির রাস্তা ভূলিয়া গিয়াছি। মাহারা শিশুর স্থায় এ অকুল প্রান্তরে ঘুরিয়া বেড়।ইডেছি। दकरन राष्ट्रित सून ठिङ्कृष्टि भाषात्मत काना आह्न। दम यम गचा म निवर्त्त । काम गत्रमा मन

"(यथारन (शरम जात कितिरक इम्र भा, काशहे जामात भन्न साम"।

्रगः मारतत्र रगारमाक धौनात्र পড়িয়। পণভাস্ত আমরা বাডি ফিরিয়া যাইতে চাই। আমাদের ক্রন্সন কোলাহল শুনিয়া পথের ধারে নানা প্রকৃতির ও নানা मुख्यानातात त्लाक अकितिक हहेग्रा विलिक्ट भागारमत गहिक बाहिन (जाभानिशतक वाफि लहेश। याहेन। किन्छ ই ঁণার। সকলেই ই হাদের নিন্ধ বাড়িতেই আমাদিগকে नहेता वाहेट कान् जबात रगतन यागता भासि भाहेन (कन १ जाभारभत निक वाजिए उरे जामना वाहे एक ठारे। रियभार्भ भागारमत खड़न नक्तु नाक्षत, आश्रीम ভাই ভাগিনীগণ অংশ্বিভি করিতেছেন ভাহাই আমা-रमत निक्र नांछि। आमता उँशित है उत्तर्भ यिनि व्यामानिगतक निक नाष्ट्रिक नहेम्रा वाहेटवंन। মহাসা: গৌরাঙ্গদেশ যথন অল্লন্যক্ষ শিশু, তথন তিনি शालत थारत जन निम त्थला कतिएक हिल्लम । छ। हात গালো বত্যুল। অনেক খলকার দেখিয়া এক চুক্ত ভক্ষরের

(लाख लागिता। ७ ऋत (गौत (क विला आहेग (छ। मात्र कारत कतिया वाष्ट्र (भो का है या नि । बहे वनिया (कात्र (भोतरक दकारम कतिया चनकात छाल काछिया महेनात क्रमा निक्षत अभिगठ द्यार इतिन। किस्त विश्वाचात्र विहिष्ठ भीता एक वृत्रित, हात निष्कत्र वाष्ट्रिष्ठ (भौँ ছिं उ न। शांतिस। (भौतात्रामत्त्र वाष्ट्रिक्ट्रें উপস্থিত হইল। আল ভস্তরের ভীব্র প্রতিকৃলতা ভেদ कतिक्षा (यू. मिक्कि-- शोताश्रदमस्यत (य को नमन स्माहिनी দিব্যশিভৃতি মহাপ্রভূকে বাড়ি পৌঁছাইয়া দিল, আমরা **(महे महीशमी मिकित अख्य आध्या अवनचन कतिए**छ **हाहै। (म भक्तिक वाहित्र जार्ययम कतित्र हहेरव ना ।** मामीद्रमत चिन्द्रत हे जार्र पार्छ। यामाता नाजित नव किनि ना। इबि वाश क्रिकिनी मात्रा आमानिगत्क नथ-खरे कतिया जागारमत गथा गर्कत्र मन लुठिया नहे छ हास्त्र (चात अक्रकारत **क्रमञ्ज** मीरशत ना।स व्यतिमात । चक्क इमगाञ्चल कुर्मित्न त्य भक्ति चामारमत মার্গের সূচনা করিয়া দিবেন, আমরা ভাহার কথা

लुनिया डांश्वा पिटक मा जाकाहैया भार काहात काट क्रतमा कतिव । आभानिशतक गक्तना महरूक क्रिकात মে অন্তঃশক্তি অবিরস্ত থে ধানি করিতেছেন, বাহিরের ভূমুল কলরবে তাহা খামরা শুনিতে পাই আমাদের বাহিরের ইন্দ্রিয় আস যণন শুস্তিত इहेगा गाहित्व वाहित्तत ममख आएकत यथन ইয়। আ।সিবে বাহিরের রতি সমূহ যথন অওমার্থীন इहेट भातित्न, जयनहे जिन्हतत कथा श्रीनाड भाहेत। बाहा क्रगर भवाक सबन मूछ इहेशा याहेन, फशनहें तन षास्तरकात व्यस्थिति छनिएक शाहेर वाहितत न्याभात सहैया यथन निजासहै विश्व कहैया পড়ি, বাহিরের কোলাহকস্ত,পে ছুবিয়া যপন আলহারা **६** हेश: या हे, उभन दम अल्डर्फनका नाहितत (११का इहेशा-भहाशुक्रम ऋश्य व्यक्तीर्य इहेशा नक्क कियम निनात्म याभावित्य याञ्चान करतन। छ। हे यथन अपा-শাল্রের বার্থ বাগ্রিভগুরেপ বাহানিনালে বঙ্গদেশীবীপর হইলা উঠিল:ছিল, তথন ভব্তির অণভার পৌরাঙ্গদেব

অবতীর্ণ হট্যা বন্ত্রগন্তীর নিনাদে জগৎকে ডাকিয়া শাহিরের শন্ধন্ত । ভেদ করিয়া ভিতরের কথা হরিশ্বনি শুনাইয়াছিলেন। তিনি ভিতরের কথা বাহিরে আনিয়া छिडत वाहित अक कृतिमा वाहा नाभातरमानुभ मगाक्रक चाग्रम् ष्टिमील कतिशाहित्सन। অবিশ্বাদী, ভাগার। সহাপুরুদ্ধের ভাহ্বানে কর্ণণাত করে ना। आवता अतियामी औन, आधारनत ऋणय शिल्यारन ভরা। তথ্নে কি আমাদের গতি নাই ় তাহা কি কখনও হটতে পারে? দয়াময়ের রাজ্যে অগভিরও গতি আছে। অধিকারামুসারে শাস্ত্রে সকল মার্গ ই বিহিত इहेगात । गाउरीन निम्नानिकातीत भरक जीर्थावेनामित बावचा वहेगाटक । गाँदाना जीवात अरे छीवीविताण मनाजरलक जिथाती नरहन याँहाता शतिलाग कविशा পাক করিতে চাহেন ভাঁহাদের জন্ম জ্ঞান (शागानित श्व छेत्रक बार्ष । भागता खान त्यान क्यां, ভिक्ति अ ममस्यत काशाक ड डिलाका कातन ना । अ गमरखत मर्या भत्रणात किছू माळ निताम नाडे। गण्युर्ग

সম্ভাব আছে। পাৰ্থিৰ জগতে যাহাকে বাড়ি বলিয়া वृत्य, छथाम बागारमत छ। हे छिनिनेनन, रामन नािमा क्ँ निशा (श्रामा (न्याश एक्स स्मान कान त्याश कि আদি ভাই ভগিনীগণ যে গুহে পরস্পার হাস্ত প্রাথার করিয়া বেড়াইতেছে, পরস্পর গ্রীতির হাঁসি ই।িসরা বে গৃহ ভালো করিতেছে, ভাছাট ভাষাদের নিফ্র নিকৈতন সনিক দেশের পারচিত লোক জ্রবাদি বে গৃহ এ। সংশ নৃত্য করিতেছেন ভাহাই আমাদের নিক নিকেতন "। शांतिय छ। रमभारम ८ थारम निरंजात इडेशा क्रीए। कतिरखरहम, বিশ্ববন্ধু দেশবি নারদ যে গৃহে বাগা ভক্ত্রীতে হার ধরিয়া भाग कतिराज्याह्न एक मनक मनन दमशारन इस्ह इतिर्ध विभिधा आद्वाद्वा विशेष्ठ वाल्यि ही व्यामाणि द्यभारन দে গুছের গুপ্ত ভাগুটেরর রত্নর।শি গালীৰ গানে সন্ধিয়া प्रभाग क'तर इर्डिंग रमेडे व्यामार्गत निक निर्क्छन । निक निर्क्त करने याहर है है है लि आयता कराए के सूर्या-

পেক্ষা করিব না। ভয়াকীণ বাহ্য জগৎকে গনের কথা প্রাণের কথা খুলিয়া বলিতে বড় ভয় হয়। স্থভরাং সেদিকে ভাকাইব না। নিজ নিকেতনের যাত্রী মহাস্থা রামপ্রসাদ স্থাহার অঞ্চল ধরিয়া আব্দার করিয়া বিশিয়াভিলেন—

मा ! कामात्र (परनना क्रेन,

(नना दशन, मुद्धाः भ्यः चामात्र नित्त पत्त हन ।

সেই জ্গনাতার করণ। কটাকের দিকে ভাকাইয়া
আহন বলি মা । জীবনের সন্ধা সমুখে উপাছত । দিন
ফুরাইয়া আসিশ । নিদারেশ কাল নিশি বিষম বিষদরীর
ন্যায় প্রাম করিবার জন্য ছুটিয়া আসিতেছে। মা এ অদম
দীন সন্ধানকে কোলে ভুলিয়া ল'ও । এই পথতারা
অবাধ ছেলেকে হাতে ধরিয়া নিজনিকেতনে লইয়া
চল । মা ! ভূমি মহিব্দক্ষিণী হইয়া মহিবাভরের
উদ্ধার করিয়াছ, মা এত দয়া তে।মার ! পশু ও মহ্রও
ভাছার অদিকারী হইয়াছে । ছঃখী দীন আসরা, মা
ছভারিনি । একবার অনাপ দেখিয়া নির্ভায় লেগিয়া মা

ছইয়া কাছে এসো! একবার অঞ্জে অশ্রু মুচাইয়া দরা করিয়া পণ দেখাইয়া ভোমার—আমার নিজ নিকেতনে লইয়া চল। গ্রুব প্রহুলাগদি ভোমার সন্তানগণ জগতে জক হইরা লীলা করিতে ভাদিয়া ছিলেন, আর আমা-দের মত অভক্ত সন্তানগণ কুপথগামী হইয়া বড় যাভনা পাইভেছে মা! মা লীলামিয়া! সকলই ভোমার গীলা, ভোমার ও অনপ্র লীলা ভূমিই বুঝা, আর কাহার ও বুঝিবার সাধা নাই। মা! আর বুঝিতে চাহিনা আর পেলা করিতে চাহি না; মা লইয়া চল, ঘরে গিয়া ভোমার কোলে ঘুমাইয়া পড়ি, চির হুপে ঘোগনিক্রার মা ঘোগেখির। বিশ্রাম করি।

व्याधारतत मानिक।

প্রকৃতির গুছ তত্ত্ব উপ্র। ইন করিবার জনা সমুদা-জগৎ অবিরভ বাস্ত। প্রকৃতিত্ব অনন্ত পর্তের—জগীস ভাণ্ডারের এতি স্থর প্রতি পট উন্মোচন করিবার জনা मानवकां कि गर्ना (ठकें। भ्रतांशन। खकुकिएक भूर्वारा অধিকার করিবার জন্য প্রকৃতির অন্তরিহিত মত্র-ताकि मण्डेर्भ जारा चालगार कतियात कना मधुना জীবনে প্রতিনিয়ত সংগ্রাম চলিতেছে। কিন্তু একুভির সম্পূর্ণ ভব্ব কথা ভিনিই বুঝিতে পারেন, যিনি প্রকৃতির উপাসক। মিনি প্রকৃতির ভাষা বুঝিতে পারেন, প্রকৃতি যাঁছার সহিত কথা কহেন একাতর গভার সাগরে यिनि निग्रा - अकुकित महाम भाषादत निान छुनिप्तादकन जिनिहें श्रेक्ति ७ वृक्ष ० है। छ, शारतन । शक्ति तमाख धा डाम डीहात है कार्ड छेदामिख हत, याँहात मश्कि अक्रिकित भूर्व शतिहस कामासारक ।

्थाकृष्टिक धारां क भगार्भत हे ब्रूहें ष्टि शृष्ठे वार्ह्ह । मचुन । नम्हार वाम । प्रक्रिन, चारता । अक्रकात कहे हुइ हि शुर्छ विधीन कान शमार्थई नाहै। यिनि धाकु जिन অপরিচিত, তিনি প্রকৃতির এই উভয় পুষ্ঠ দেখিতে भाइतिव किजार्भ ? धकुछित निताष्ठे निमाल करलगततत्र পূর্ণ সর্বাকে তিনিই জানের আয়ন্ত করিয়াছেন, যিনি প্রকৃতিগর্ভে বিলীন হইতে পারিয়াছেন প্রকৃতির গুফু কথা জানিবার জন্য যিনি প্রকৃতি রাজ্যের অন্তস্তলে প্রবেশ করিয়াছেন, ডিনিড আন ফিরিবেন ন। হতরাং প্রকৃতির ঘরের কপ। যদিবার লোক क्षार्ड नाहै। शकुं जित्र चरनक कथा श्वनिवात करनक निमप्त (मिनात चाइ)। याहा मचुर्य (मिनाउ भाहे, ইহা প্রকৃতির পূর্ণ চিত্র নছে । ইহা প্রকৃতির একটি পৃষ্ঠ। প্রকৃতির অনাপৃষ্ঠ শত गरू আবরণের মধ্যে অব-अधिक। भाज गहत्व नानशास्त्रत छिलत निशा धाक्रलित গে আভা ফুটিরা শাহির হ্য, আমরা ভাহাই অমুভব করি। প্রকৃতির প্রকৃত সরুপ নিরাবরণ অনবঞ্চিত

মুর্ত্তি আমনা কথনই উপভোগ করিতে পাই না।
আমনা যাহা দেখিতে পাই, তাহা প্রতিনিম্ন মাত্র
আব্ছায়া মাত্র। স্বরূপ ভাহার সত্দ্রে। স্বরূপ উপভোগ
করিবার সামর্থ্য আমাদের নাই। পৃথিবীর কীব
প্রকৃতির স্বরূপ পরিপাক করিবার অধিকারী নছে।
প্রকৃতির স্বরূপ দেশিতে গেলে পার্থিণ চক্ষু ঝল্সিয়া
যায়, স্পর্শ করিতে গেলে স্কৃশক্তি ভণ্ডী গুত হইয়া যায়,
পাক্ষেদ্রের গে স্বরূপরে কাছে স্তন্তিত হইয়া যায়,
ভাই পার্থিব কীবের পক্ষে কেবল প্রকৃতির বিরূপেরই
বারস্থা।

সূর্য্য কিরণের স্থার সাধা, তাহা কে জানে ? কেই বা ভাহার তাপ সহ্য করিতে পারে ? আকাশ ও পৃথিবীর কত লক্ষ ২ পর্দা। ভেদ করিয়া সূর্য্য রিশ্ম এ জগতে আসিয়া পড়ে। অসংখ্য ব্যবধানের ভিতর দিয়া আসে বিলয়াই স্থাতাপ আমাদের স্পর্শোপযোগী হইয়াছে। স্থারশার স্থারশার স্থারশার স্থান শত সহস্র ব্যবধান স্পর্শে শীতল হইয়া—বিরূপ হইয়া আমাদের কাছে আসে তাই

তাহ। অমুভব করিতে পারি। যদি অব্যবধানে সুর্যোর খাঁটি ভেক—শুদ্ধ স্ত্রপ পুণিবীতে পড়িত ভাহা হইলে পুথিবী ভাছা ধারণ করিতে পারিত না। পুণিবী ভল্নী-ভুত হইয়া কোথায় উড়িয়া যাইত। সৃষ্টি ছারথার হইত। হতরাং এক্তির শুদ্ধ মৃতি পৃথিণী সহ্ করিতে পারে না। প্রকৃতির নিরূপ লইয়াই ভাগাকে সম্ভন্ট ণাকিছে । গোমুখী হইতে পুভদলিল। ভাগীরশী নিঃস্ত ৰ্ইয়াছেন। কত খালবিল কত নদনদীর সহিত মিলিভ কত বিকারগ্রস্ত হইয়া ভাগীরথী শাসাদের সম্মুখে আদিয়াছেন। গোমুখীর বারিধারা যেমন নির্মাল পণিত্র, এই নদনদীর জলমিঞ্জিত গঙ্গার জল তেমন भवित राज्यन निर्मात नरह। अथा अहे शकात कलाक है ব্যবহার করিতে পাইয়া আমরা সম্ভুট আছি। বিশুদ্ধ थाँ। विश्वात कल देव बामास्मत बामुख्ये घरते १ इंडताः প্রকৃতির স্বরূপের ধার দিয়াও আমরা न। वालक (यमन हैं। प्रतिवात व्यानाम (म) जिया याम সেই রূপ প্রকৃতিকে ধরিব বলিয়া আসরা দৌডিয়া

ধাই। আকাশের চাঁদ দেখন আকাশেই থাকিয়া যায়,
দেই রূপ প্রাকৃতিও চিরদিনই আগাদের অধিকারপথের বাহিরে পাকিয়া যান। স্ক্রবাং প্রকৃতিভত্ত্বর
একটি কুত্র ভ্নকনিকাও সম্পূর্ণরূপে আয়ত্ত করা
মকুদোর পক্ষে অসম্ভব ব্যাপার।

এফুডির শ্বরণ তের স।কাৎ সম্বন্ধে পৃথিনী ধারণ করিতে পারে না, ভাই শত ব্যবধানের ভিতর প্রকৃতির রশ্মিরেখ। এ জগতে যাহা আসিয়া পড়ে, कारा है भी पर्य भी त्यंत्र भक्त यर्भ के । खन्नात कम छन् হইতে নিঃসত হইয়া পতিকোদ্ধারিণী গঙ্গা যে তেভে শাহির হইয়। আসিয়াছিলেন, সেতেজ কি পৃথিণী भावन कतिएक भारत ? एम की अरक्तामधी ध्यवाह भावा ভগৰাৰ ভূতভাৰন ভৰানীপতি প্ৰথমে মাথায় পাতিয়া লইয়া ছিলেন। তবে সে প্রশাসিতবেগ পৃথিবী সহ করিতে পারিয়াছিল। স্করাং অনন্ত উৎস উৎসালিী অকুতির প্রস্রবণ বাবধানের ভিতর দিয়াই 🔞 জগতে প্রবাঞ্জি ইইলা পড়ে। বাবধানের ভিতর দিলাই আসর।

প্রকৃতিকে দেখিতে পাই। অগ্নির যে ত।প স্পার্শ ভামরা অনুভব করি, ভাহা আগির বিশুদ্ধ তৈল্য মৃতি নহে। বায়ুর সম্পর্কে শীতল হইয়া লাগ্রেয় তাপ আমাদের অপুভবের গোচরীভূত হয় । স্তরাণ অগ্নির বিশদ্ধ তৈজস মূর্ত্তি কি, ভাষা আমাদের জানিবার যো নাই। অগ্রি তাপের ডিগ্রী আমর। বুঝিতে পারি, কিন্তু মাত্র। বুঝিশার সাধা নাই। এই রূপ কলের খাঁটি সামরা অফুভব করিতে পারি না । পৃথিবীর গাঁটি পৃপিবীত্রও আমাদের উপভোগে মাসে कि जिल्ला एक गत्र (ताम हेशता मकत्त्र है अभी-কুত। পঞ্চতুতের সংমিঞাণে পরস্পর সংমিঞাত। স্বতরাং খাঁটি জিনিষ উপভোগ করিবার অদুষ্ট আমাদের ্রাকুডির স্বরূপ বুবিবার সংস্থা আমানের নাই। ব্যবধানের ভিতর দিয়া প্রকৃতির দেখিতে পাই, ভাহা ত আব্ছায়া—প্রতিবিদ্ধ মাত্র। অভিনিম্ব দেখিয়া শিক্ষের এক্ষণ কি সম্পূর্ণ রূপে वृक्षि । शाहा शाहा १ नकल (पशिया। व्यामान त

কি চেনা যায় ? ফটোগ্রাফে কাছারও হয় ত চম্কান धतरगत करते। छेठिल, काहातछ वा हाँ निमाधा मुध থানির চিত্র উঠিল। কিন্তু তাহাই কি তাহার সার্ব্বদিক স্বরূপ ? আবার বিক্লভ ফটোগ্রোফে যে প্রভিমূর্ত্তি উঠে, তাহাও বিকারপ্রস্থ হয়। হতরাং প্রতিকৃতি দেখিয়া প্রকৃতি চিনিবার উপায় নাই। অবিদ্যার ফটোগ্রাফে অকু ির এই মে জাগতিক অতিমৃত্তি অঙ্কিত হইয়াছে ইহা শজানবিকার-কণাঞ্চত, হুতরাং এ প্রতিছায়া নে খিণা জ্ঞানবিজ্ঞানময়ী প্রকৃতির স্বরূপ তত্ত্ব ভাবগত হওর। মুমস্তব ব্যাপার। প্রাকৃতির ছায়। লইয়াই আমরা বিমোহিত। প্রকৃতির কায়ার সংস্পর্শ করিবার অধিকার वागारनत नारे।

একৃতির বিচিত্র মূর্তি। এই অনস্ত অপরিসীম মৃতিকে
পূর্ণরূপে আয়ত করিতে হইলে আমাদের ইন্দ্রিরগণকে
তর্পযোগী করিয়। লইতে হইকে। যে রতি আরা
কোন বস্তু তবু বুঝিতে চাই, সেই রতি রূপ যন্ত্রটি
পরিপুষ্ট না হইলে পদার্থের প্রকৃত তবু ফিরীকৃত

হইবেনা। কিন্তু আমরা দে দিকে তাকাই না। আমাদের যান্ত্রভারের ভাল রূপ সম্বলনাথাকিলেও नंड २ निकारिष्ठ व्याद्य निया हाल निहे। करन की हानू আছে কিনা বুঝিতে হইলে যেমন বৈজ্ঞানিক যন্ত্রের প্রয়োজন সেই রূপ প্রাকৃতিক তত্ত্ব যথার্থ রূপে বুঝিতে **इ**नेटल পরিপুষ্ট চিন্তাশক্তির প্রয়োজন । বৈজ্ঞানিক यञ्ज (य कथ। 🗗 क कतिया विनिधा (नग्न. छ। हात (यमन ন্ডুন চ্ডুন হয় না, ভুল ভ্রান্তি হয় না, সেই রূপ পরি-পুট চিম্বাশক্তি যাহা নির্ণয় করিবে, তাহাতে আর পরিবর্ত্ন হয় না, ভুল ভাল্তির লেশ মাত্র ভাছাতে थारक ना । जान्य शतिशुक्ते हिन्द्रायकि ना कामारल, অপরিপুট পরিবর্তনশীল বৃদ্ধি লইয়া প্রাকৃতিক তব্রের উদ্মেষ করিতে যাভয়। বিডম্বন। মাতা। পরিবর্তন-বুদ্ধির উপর প্রাকৃতিক তত্ত্বের সিদ্ধান্তভিত্তি খাপন করা আর বালুকা স্তুপের উপর প্রকাণ্ড কারু-कार्या थिठि अद्वानिका निर्माण कता अकरे कथा। अहै যে আক্রকাল পাশ্চাত্য দেশে ক্যোতিস্তত্ত্ব সন্থক্ষে

धकालिङ ९३(छएइ तम ममस्डई चामाजि। ভাষাকে বৈজ্ঞানিক সভ্য गीता शाह्य शाह्य शाह्य না। কেননা অদ্য যাহা স্থিতীকৃত হইবে, কল্য ভাহার পরিবর্ত্তন অবশাস্তাবী। ইউরোপে বত্রমান বর্ষে বে गाउत चापिणका हिलाएक इनागांनी नार्व इत्राफ छाहा (काषाम উড़िमा गाष्ट्रेर । अबे ताल अनवत्र शतिवर्खनः नील गड लहेशा गृत्थंत ठएक धाँधा दल छा। या हेएछ भारत গটে, কিন্তু ভাষাতে একত পদার্থ তত্ত্ব কিছুই নিরূপিত ना । "वृष्कित दशनाश त्माकटक (शारमाक धाँमात ट्यांभएक शाला यात्र नती, किस जाहारक मरकात किनाता कड दृत हत्। जाहा निर्नत कता कठिन। त्लाकटक এবং নিজের সনকে কোন রূপে ব্রাইতে পারিলেই যে (भड़े बुबान किनियहै। पूर्न प्रका रहेशा में।ज़ाहेरव, **अमन** बिभ्द्रक कथा (कान मार्गनिक वा रेवछा। नक मथप किता। भनिएक शास्त्रम ना। आक्रिएम भक्त क्रिक बनिया প্রচারিত হইল, ফলাই যাদ ভাষা দেঠিক বলিয়া প্রতি-পম হয়, ভাষে মানবের পরিবর্ত্তনশীল ব্রির উপর

(कमन कतिशा विश्वाम कता याश ? शूट्य চন্দ্র একটা গ্রন্থ পদার্থ এখন কিন্তু সে মত পরিবার্তত **हरे**ग्राह्, अभन छेशशहत म्हाई हस्तक (कला হইয়াছে। ভথন মত ছিল, চন্দ্র আলোক বিশিষ্ট, এখন श्राहित है शाहित है जिस निष्य जात्ना क मुन् **उद्भारत वात्नाक (मिथ्रिक शांश्वा यात्र, जाहा** স্র্যোর কাছ হইতে ধার করা। এখনকার এই মভই যে ঠিক, তাহা কে বলিল ? হয়ত এমত ও দিন কভ ক বাদে উড়িয়া যাইতে পারে। স্থতরাং এমত যে ধ্রুৰ সতা, তাহ। কেহ স্পদ্ধ। করিয়া বলিতে পারেন **७८**न छेळ द्राभ गडना नीता मूर्य (लाकरक व्याहेएछ পারেন আসাদের এট মত যে বেঠিক, তাহা ভূমি যথন প্রমাণিত করিতে পার না, হুতরাং ইহা ঠিক বৈ কি ? बहे थान भागाल छ। एउन मयस्य करें। **इहेटलट । काम ममा महाताल कृष्ण हट्छत थालि** ন্যাবের তৃকুম আ'দল দে পৃথিনীর কোন ধান্ট। ঠিক মণ্য খান,ভাহা এক মাদের মধ্যে ঠাহার সভাসদ্ পণ্ডিভ

মণ্ডলী খারা ঠিক করিয়া দিতে হইনে। কুফ চন্দ্র নবাবের এই খান খেয়ালি অন্ত ভ্কুম পাইয়া চিন্তিত হইলেন। ২ পণ্ডিতকৈ উক্ত বিষয়ের একটা স্থির সিদ্ধান্ত করিতে নিযুক্ত করিলেন। পণ্ডিতগণ বিদম বিভাটে পড়িলেন। পুণিণীর মধ্যম্বল 🕻 ক করিতে হইলে সমগ্র পুণিনী ঘুরিতে হইবে। সমগ্র পুণিনী ঘুরিয়াও মধ্যক্ষ ঠিক করা বড় গোজা কণা নহে। আর এক ভিতরেই বাকেমন করিয়া সমগ্র পৃথিবীটা ঘুরিয়। আসা যায় ঃ পণ্ডিত গণ কিছুই কুল কিনারা করিতে भातित्यन ना । तांका कृष्ण हस्त विषय हिन्दाकृत इहेगा। উঠিলেন। রাজাকে চিস্তায় অিয়মাণ দেখিয়া এক দিন र्गालान ভাঁড় गालात किछामा कतिरनम। ताका ममञ् कथा है बिल्लिन। लालाल छाँ छ जारा खनिया दाँमिया बिलानन, आहे मार्माना विषयात क्रम व्यापनात अञ कुर्छावना (कन १ व कथाछ। अछ निन आगाटक धूनिशा ब्रालन नाहे (कन ? जाभगातक जात हिन्छ। कतिएक हटेरव ন।। মামি পৃথিণীর মধ্য স্থান ঠিক করিয়া দিব। রাজা

গোণাল ভাঁড়কে বিখাস করিতেন। শ্বতরাং আর बिक्लिक ना कतिया (गांशाल खें। एटक है वे विषयात कात निर्त्तन। (गांभात कें क्रिश्त भारत भरपाठे शृथिती ঘুরিয়া মধ্যস্থান ঠিক করিবেদ এই দ্ধুপ প্রতিজ্ঞা করিয়া तामात काइ रहेरल इष्टि लहेशा हिलाशा (शर्लम । (शाशाल चाँ इ निक आरमत किशक तक्षी अकते। কঙ্গলের ভিতরে একটা খুঁটা গাভিয়া আসিলেন। বাভি चानिया हुल कतिया वनिया तहिरलन। এक भान वारम ताकात कार्ट शिया मःनाम मिल्लम मधा खाम ठिक कता इंडेशांट्ड। ताका नवावटक मभाज्याम (मधादेवांत আমন্ত্রণ করিয়া পাঠ।ইলেন। রাজা ও নবাব পাত্র মিত্র ममिलवाहारत (भाभात छ। एउत महिल निर्मिष्ठ चाम (मिथ्टि हिल्लिन। (गांशान चाँ ए (महे कक्लात कार्ष गिता विलियन. के द्य भूँ है। हि त्य चारन लगाँ छ। ति ह्यारक উহাই পুথিবীর ঠিক মধামল। নবাব ক্রেছ হটরা। विलालन, এত तम थाकिए एकामात्र आहे वास्त्रि कारकृष्टे পुश्चितीत मधा यस हहेल १ ईहा कथाहै गढा नहा

(छामात भछ मिथा। वानि के वामि निरम्य तिरा माखि मिथा। तिथान छँ। ए निल्लिन आद्धि ना। वामि मिथा। कथा निर्मान ना इत, व्यापनि लोक बाता। श्री नेत हाति धात ना शिता। प्राप्ति लाक बाता। श्री नेत हाति धात ना शिता। एनिएड भारतन छेश हिक भग द्यान किना ? नवाव विषय निभूत पिएत गिएतन । त्यापाल छँ। एएत कथा मिथा। व्यमाण कति एक हरेल भूथिनोत हाति। धात मानिएछ इत। क्या खात्र व्यापाल छँ। एएत कथा हारा व्यापाल छँ। एएत व्यापाल छँ। एएत व्यापाल व्यापाल छँ। एएत व्यापाल व्यापाल छँ। एएत व्यापाल व्यापाल छँ। एएत व्यापाल व्यापाल

্ আজ কালকার বাঁহার। প্রকৃতিত ব্রক্ত চিন্তাশীন বলিয়া পরিচিত, তাঁহারা ঐ রূপ গোপাল ভাঁড়ের মত অগৎকে চাত্রীর জালে জড়াইতে চাহেন। তাঁহার। সিদ্ধান্ত করিলেন, চন্দ্র এত হাজার যোজন বিস্তৃত। ভূমি যদি আপাত্ত কর ইহা কেমন করিয়া হইল, তাঁহারা হয়ত বলিবেন, "আমাদের কথার বিশ্বাস না হয় চন্দ্র মণ্ডলটা মাপিয়া দেখিতে পার"। কাষেই

ठांशामित अहे क्याप्त हात्र मानिएक ह्या हस्ट्स पारमाक আছে কিনা এ সম্বন্ধে আপত্তি করিলে ভাঁহারা হয় জ বলিবেন, আমরা যে সিদ্ধান্ত করিয়াছি, তাহা যতকণ না ভূমি খণ্ডন করিয়া শেঠিক বলিয়া প্রতিশন্ধ করিছে। ণাণিতেছ, ততক্ষণ ইহা তোমাকে ঠিক বলিয়া সানি-ভেই হইবে। ওঁ। হাদের এই ভীষণ আসপদার ভীত্র ভৎ मनात्र कील रहेता मुर्च कंगर लें।शास्त्रत कथा भित्रायार्था कतिए वाधा इटेएएए, डाहाएमत कथा ভাবিয়া গেই পথের পথিক হইতেছে। কিন্তু ভাঁহারা गाहा विनिशास्त्रन, जाहा (य भकाष्ट्रा, जाबाहे (य श्वितं গিদ্ধান্ত, ভাহা কেমন করিয়া স্বীকার করিব ? কেননা पृत्ति है बालशाहि अवति पूर्वे अञ्चािष्ठा bविषिनहे शतिवर्जनभीत ।

স্ত্রাং প্রাকৃতিক তব্ বড়ই গুরবগাছ ব্যাপার। প্রাকৃতিক তব্ সবদ্ধে বাহা কিছু মীমাংসা চুট্যাছে, সমস্তই অসম্পূর্ব। আল যে সম্ক্রার ও আলোকের ক্যাবলিব ইহাও প্রাকৃতিক তব্রের এক কটিল সমস্তা।

জগতের জীব অন্ধকারকে ভাল বাদে না गैड्र मुर्कि मकाल हे त्रुगात हाक एमधिया व्यारमारकत मिराष्ट्रांक (मिरात क्या है श्राह्य कीव नानाशिक । नगर्व भनाचारक नकत्न है बक्क कातरक ক্ৰগৎ হইতে বিদায় দিতে চায়। তাই দাৰ্শ নিক দৰ্শ-নাজে অন্ধকারের অভিভের ম্ল পর্যন্ত উৎখাত করিতে **हान। नवा मार्गानक विलाश। शाहकन् अक्रकात विलाश** (कान अक्छ। किनिय नाहै। चाटलाक যথন অন্ধকারের উৎপত্তি তথন আলোকের অভাব ভাড়া অন্ধকার মার কিছুই নহে। কিন্তু অন্ধকার বলিয়া मिन नक्षे। किनिय ना शांकिल, लाश इटेल अहे क्यां हित एष्टि इहेल (क्यान क्रिया। ? विषया পাকিলে ভাষার ভাষার উৎপত্তি হয় কেমন করিয়া ? बाहा ना श्रांकित्न बाहरकत रुद्धि हम्न एकमन कतिता আলোকের অভানই অন্ধনার এ সিদ্ধান্ত বজার রাখিতে ष्ट्रेल, **यद्यका**रतत भूत्र्य बात्लारकत बल्डिक चीकात कतिरा हहेता। भारता भारताक विमामान शाकिरत ज्य তাহার অভাব অক্ষকার এই কথা সঙ্গত হয়। আলোক বলিয়া কোন কিনিষ যদি অতাে প্রাসিদ্ধ না থাকে, তবে কাহার অভাব অক্ষকার হইবে ! স্থাইন থাক্-কালে জগৎ অক্ষকারাচ্ছন ছিল, ইহা আগ্রালাজ ও ইংরাজি শাস্ত্র বাইবেলেরও মতে। বেদ বলিতেছেন— ভ্যানীং ভ্য আগীং

ভ্যসা গৃত্দব্রে প্রকেডম্।

वाहेरवस्थ विलाखाइन-

"Darkness ruled the face of the universe and God said let there be light and there was light?"

স্তরাং সে সময়ে আলোকের নাম গছও জগতে ছিলনা। তেমন অবস্থায় আলোক বলিয়া যথন একটা জিনিষ প্রাসন্ধই নাই তথন কাহার অভাব অকলার হইবে ? যে নিজে আসিছ, সে অপরকে সিছ করিতে পারেনা। স্তির প্রাক্কালে আলোক যথন স্বয়ং অসিছ, তথন সে নিজের অভাব রূপে অন্ধনারকে সিছ করিবে কেমন করিয়া ? অন্ধকারই জগতের স্বভাব,

আলোক ণিকুভি মাত্র।কেননা স্তির পুর্নো অক্ষকার রাজত্ব করিত, স্প্তির পরেও অন্ধলারই রাজত্ব করিবে टकवल अहे शूर्व ७ शत नगरवत गिक्क कि कि वित्तत লোকের লীলা খেলা। হতরাং অন্ধকারই ব্যাপক भवार्थ। एष्ट्रित भूत्रव याहा धनामिकाल कहेटल विक, এবং স্তির পরে যাহা অনন্ত কাল পর্যান্ত বিদ্যুমান पाकित्व, भिष्टे बनानि बनस्य भनार्थ बद्धकात भन्द भात (य व्यालाक सृष्टिकात्मत्र किरादक्रन चात्रो, रमष्टे व्यानि व्यस्त विभिक्ते कर्गावध्वश्मी व्यादनाक इहेल किना धकुछ मद भवान हेहा निछास्र है অপ্রকারের গর্ভ হইতেই জগৎ নি:স্ত হইয়াছে. रित्र कृष्टि एक स्थाद विलीन इहेरव, वर्षमार्ग अ একবারে অম্বরার বিবর্জ্জিত নহে। হুতরাং ভূত ভাবনাৎ । उमान । बहे जिकालवा। श्री व्यक्तकारतत जूलनात আংশাক নিতান্তই কুত্র পদার্থ। অন্ধলারের বিরাট নিশাল বিশ্বব্যাণী কলেবরের সম্মুখে আলোকের ক্সুন্ত মুর্তি নিভান্তই নগণা। হুতরাং এ৩ বড় অন্ধকার কিছুই

नम् बलिया जुता किनिय बलिया উপেक्यात किनिय नरह। অন্ধকার-ভত্ত একট বিচার করিয়া দেখা যাউক। অন্ধকার জিনিষ্টি কি তাহ। বকা বড় শক্ত অশ্বকার শক্তের কেছ্২ বৃাৎপত্তিগত এই রূপ অর্থ করেন " অন্ধ্ৰং করে।ভীতি অন্ধকার: " অর্থাৎ যাহ। 🏟 ীনকে অন্ধ করে, তাহাই অন্ধকার। যাহাতে দৃষ্টিশক্তির প্রতি-(बाध करत, जाहाई अक्षकात। हेश हे यनि मद्यत वार्पांखनक नर्ध हा, जाहा हहेता जाताक क অন্ধকার হুইয়া দুঁ।ড়ায়। থানিক ক্ষণ সুযোর দিকে ভাকাইয়া থাকিলে চক্ষান্বাকিও অক্ষের সভ হইরা যান। তিনি তথন চক্ষে আর কিছুই দেখিতে পান না। হতরাং পূর্বোক্ত অন্ধনারের অর্থ-মুগারে লোককেও অন্ধকাশের ভিতর ফেলিতে হয়। **उड़ाभात भाक गाहा अक्षकात, अशास्त्र भाक**

ভাহা আলোক। তুনি মান্ত, অন্ধানে তুনি কিচ্ই দেখিতে পাওনা কিন্ত এই জন্ম তুনি অন্ধকানকে দৃষ্টি-শক্তির— একাশ শক্তির বাধক ববিয়া হির ক্রিয়াচ

? ভূমি যে অপ্নকারে অন্ধ হইয়া থাক্ বাজুরের পক্ষে সেই অন্ধ্রণারই উজ্মল আলোক। তোমার পক্ষ লন্ধকার একটা বিকট পদার্থ, বাস্তরের চক্ষে ভাষাই शतम सन्मत । व्यानात (य निवादनादक कृति (पिथिएंड भा व. रमहे मिनात्मा कहे नाकुरतत भएक (घात অন্ধণার। হু চরাং অন্ধণার যে নিতান্তই একটা भनार्थ, **जाहा ८कह भभ**े कतिहा विलिट भारतम मा অদ্ধকারের একটা সর্ববাদিসম্মত লক্ষণ ছির वछ्हे कठिनना ज्ञि याहाट किहुहे दम्थिट शास्त्री. एक। भारक यांद। बद्ध करत. का हा है यनि बद्ध कात हत् . का हा इहेटल ब्यानक थकारतत वारलाकरक है बद्धकारतत परन मिणारेया (कलिटिक र्या । यारावा (कतिन দীপালোক সর্বদা ব্যবহার করিয়া থাকে, ভাহার। मित्रात रेजलत मीभारमारक थात्रहे कि इहे रमिश्र ज পায় না। হুতরাং সরিসার তৈলের দীপালোক ভাহার পক্ষে অদ্ধকার। যাহারা short sighted, একটু দূরের পদার্থ যাহার। কিছ্ই দেখিতে পায় না, দূরত্ব ভাহাদের

হুতরাং বিচার করিয়া দেখিলে অন্ধকারের কেত্র বিস্তুত হইয়া উঠে। তুমি যে রাত্রির অন্ধকারকেই অন্ধকার বলিয়া স্থির করিয়া রাখিগাছ. তাহা ঠিক নহে। যুক্তির অস্ত্রে ব্যবচ্ছেদ করিলে দেখিতে পাই তোমার ঐ দকীর্ণ গণ্ডী পার হইয়া শ্দ্ধকার জগদবাপেক মর্ত্তিতে ভাসমান। যাহা যাহার (ग टेन्द्रियात चावतन कातक, जाहाहे जाहात অন্ধকার ইহাই যদি অন্ধকারের সর্ববাদিস্মাত লক্ষ্ হয়, তাহা ১ইলে দেখিতে পাই লগতের সঠাত্রই चक्कात । चक्कारतंत अहे मन्तरं का एकत्व में। ज़िहेल জগৎকে অন্ধকাররাশিপরিপুরিত বলিয়া বোধ হয় 🗗 क्ष १८७ (यन अक्रकांत वहे आंत्र कथा नाहे। अक्रकारतत्र গভীর গর্ভে জগৎ যেন ভবিয়া রহিয়াছে। চকুর পক্ষে যেমন অন্ধকার, অন্যান্য বাহ্ ও অন্তরিন্দ্রিয়ের পক্ষেও त्महे क्रथ अक्रकांत कश्टरक चितिया त्रहिशास्त्र । কুষ্টের পক্ষেদশনি শাস্ত্র যেমন অন্ধকার, সেই রূপ मार्भ निटकत शत्क । कृषिविमा। अञ्चलात । कवित्रारकत

পকে জ্যোতিবিদ্যা শেমন অন্ধ্ৰণান, জ্যোতিস্তত্ত্তের ক্ৰিগাজি বিদ্যা সেই ক্লপে সমান আল্পানু 🕻 व्यक्ष । त्र नारे (काशात श्रं व्यक्ष कारतत श्रंथत ত্যক্ষ চারি দিকে ভাষাহিত হুইতেছে। অ্যাস তণ ৰহিনা দিগ্দিগন্ত প্লাৰিত করিয়া। অন্ধকার व्यवस्थाताम ८०७ (श्रीलमा हिलमा८इ । व्यक्तकारतव নিবিড় কালিমাস্ত্রণে জগৎ যেন ধ্যানময় যোগীর ন্যায় নিঝুম ভাবে সমাহিত হইয়া রহিয়াছে। অন্ধ্রুণারসমূদ্রের वितारे वटक कार द्या वृष्त्रत नाम जागरा छ। गराउट । এই বিশ্ববাপী অন্ধ্রকারের করাল এনে ইইভে পরিত্রাণ পাইবার জন্য জীব জগৎ খবিরত গাস্ত । এই ভীদণ লবিজ্ঞাবরী কলে বিষ্ধরীর আক্রেমণ হইতে शाहेवात कना मकरशहे बााकूल। किन्छ अ अञ्चाशक অভিমন্মগত অন্ধকারের কিছুই কুলকিনারা হইয়। ৰত্যান উনিবিংশ শত।ক্ষীতে সভ্যমাতি অনুকার

इहेर्ड चाटलाटक गाहेट छ। हा। चन्नकारतत क्रिक

भिक्त भतिहात कतिया बात्मात्कत ख्लास कृते। बालिक्रम চায়। কিন্তু অগ্নির আলোক ছাড়া অদ্ধকার विमृतिक कतिवात चात कि कान छेलाय नाहे ? অন্ধর পরিত্যাগ করিবার জনা অগ্রিময় আলোকের वावन्द्रा (कन १ अधिमती मीलाभाषात्र शह्ब विमृतिक इस वर्षे, किन्न काहारक रय भन्नाभ वाডिशा উঠে अधित खेश्राफिक श्रान मन तम विकल इहेगा উঠে। অশাব্রি অন্ধকারে পীড়িত হইরা শান্তির ভিথারি ছইর। যাহার চরণে শরণ লইলাম, ভাহাতে যদি ষশান্তির ভীত্র তাপ স্থারত বাডিয়া উঠে তবে তাহা लहेश। कि कतिव ? পতत्र अधात्मात्क छेरकूल इहेश। তাহাতে যেমন ঝাঁপ দিয়া পড়ে দেই রূপ উনবিংশ मठाकी व्यात्मारक नम्क निज्ञा পড়িতে চায় (कन ? शुष्टिया मतिवात कना नाकि ? भूत्रीहे विनिताहि अञ्चलातित विकृष्टे मुर्खि नकरनहे

পুর্নেই বলিরাছি অন্ধলারের বিকট মূর্ত্তি সকলেই রণার সহিত পরিত্যাগ করিতে চার, আলোকেব শুল্র স্থানে মনোমোহন ছবি দেখিবার ক্ষনা কগতের

कीर लालाशिक । अक्षकारतत ताजरं दिक्हे राग চায় না, সকলেই আলোকের সাত্রাজ্যের ভিখারি। অন্ধকারের জীর্ণ কঙ্কাল্যয় আস্তরণ উঠাইয়া **मिया ज्यात्नारकत छन्ने मिःशमन ख्लाय मकत्नहे** निছ।हेटक हास। अक्षकात (यन मतर्गत (कामागात, আংশোক গেন জীবনের অমৃতভাগুার, অন্ধকার भारताभित ग्राभाग भया। जारलाक (यग शागगणिकत অকুরন্ত শাস্ত্রক। অন্ধকার খেন ভূত প্রেত পিশাটের लीनायन, जारलांक रगन गांधु गराजा (पनकांत বিরামক্ষেত্র। অন্ধকার যেন গাচ ঘন গভীর অরণ্যাণী, খালোক সেন খনরাবভীর পারিজাত সহত্র সমাকীর্ণ नेकान कोनन। जञ्जकात ७ जाएलाएकत कहे जाशहे विक ক্ষাতে আমত হইমাছে। পুতিগন্ধ পরিপুরিত ক্ষা-কাটের কিলিবিলিময় শহব্র রোরণ নরকের সার স্বৰি অন্ধানে আজোপিত হইয়াছে, আৰু অংগৰ পুঞ্জীকুত গে)ন্দর্গের অনন্ত্রণরাধ আলোককে বিভূষিত করা চইয়াতে। বীভৎস রণের বোকা মাণায় লইয়া

অন্ধকার জগতের কাচে নিক্ষিত—যাণ্ড—পদদলিত ইইয়া মরমের অভিশাপবাণী ঘোষণা করিতেছে। দিকে তাকাইয়া সহামুভতির একবিন্দু অশ্ৰদ্ধল নিক্ষেপ করিশার লোক এজগতে কেছ আছে किना का निना जागता कि श्व अक्रकातरक উर्शकात **हत्क (नशिंद्र शांति गा। अञ्चकात आत्माक अध्याक** अडहे इष्ट भड़ है जघना है हा यहन कति एड शाति ना । একট বিচার করিলে দেখিতে পাই অন্ধারই এক थकात भारतारकत अभाषां । भन्नकारतत् रकार्ष त्म भिनादिमाक मिलित निकास हा छ। हार अञ्चल तिका সকলের বরতীয় বলিয়াই মনে হয়। ত্রোহগণের মধ্যে चरनरक हे इस छ (मिसार्कन, ताखित रचात चास्रकारत খাণিক ক্ষণ তাক।ইয়া পাকিলে চক্ষর সম্মুপে করিয়া এক রক্ম ফস্ফরস্ জ্লিতে থাকে তৈক্স আলোক শক্তির ক্সাণাত। অন্ধকার বই আর ভ (कहहे नहहा स्थित शृत्य अक्षकात है धागरम विष्यामान, छाहात्रहे कृक्तिर अने कांत्रशा कारलाक निःस्ड इहेगारह,

মতরাং অন্ধ্রকার জননী স্থাপ, আলোক তাহার ক্রোড়ে লালিত পালিত শিশু। অন্ধ্রকারের মাহাল্যা আমরা বুঝি না, তাই তাহাকে উপেক্ষার চক্রে দেখিয়া থাকি। যাঁহারা এই অন্ধ্রকারের সর্মা বুঝিতেন সেই আর্য্য শ্বামি অন্ধ্রকারকে সাধনা রাজ্যের প্রধান সহায় বলিয়া নিদ্দেশ করিয়া গিয়াছেন। তন্ত্রশাস্ত্রে আনাবাস্যার ঘোর অন্ধ্রকারে শ্বসাধনাদির প্রক্রিয়া বিহিত হইয়াছে। অমাবাস্যার ঘোর অন্ধ্রকারের স্ক্রেশক্রিশ্বলম্বন করিয়া পিতৃগণ প্রাদ্ধ প্রত্যাশায় আনিভৃতি হইয়া থাকেন, ইহাও শাস্ত্রের নির্দেশ। যথা বায়ুপুরাণে—

জনাৰ:ভাদিনে পাঠেই গুত্ৰাবং সমাজিভাং।

ৰাষ্ঠ্তাঃ প্ৰবাহ'ণ আছেং পিতৃগণা নৃগাম্।

স্ত্রাং যে অন্ধকার সাধনা-শক্তি-বিস্ফ্রণের প্রধানতম সহায়, দৈবালোকশক্তির যাহ। আধার, ভাহাকে আমরা মুনা করি কেমন করিয়া গুযোগী মধন

চকু মুদিত করিয়া প্যানমগ্ন হয়েন, তখন ভাঁহার

हाति। एक सङ्गकाता छ्व इहेटल ७ (महे सङ्गकात छ एभत हारभुष्टे जिनि शतम (क्याजिः स्विरिक গিরিওহাদ্ধকারেই আর্য্য ঋষিগণ ত্রোপহারী অপূর্ব ठल्लमात निमल (क्यां एन नाष्ट्रेश अर्क निम अन्तराहर्ने করিয়াছিলেন। স্থতরাং যে অন্ধকার সাধনা শক্তির উন্মেদক—পবিত্র দৈনশক্তির थायान, जाहारक নিভান্তই জঘণ্যতার চিত্রে চিত্রিত করা উচিত নহে। 🕂 पुर्स्य हे निष्याहि अक्कारतत मार्क्यकोस क्लाब দাঁড়াইলে বুঝিতে হয়, অন্ধার বিশ্ব্যাপ্রী। ভিতরে বাহিরে ওত পোত ভাবে অন্ধকার বিদ্যমান। এই বিন্যুট भक्कातरक विमृतिङ कतिरङ इहेरल विताष्ठे आलाक भातात आत्याकन कतिएक इहेरत । धहे विश्वतानी अधित আলোকময়ী স্থালামালায় অনুকার নিবৃত হইতে পারিবে বটে, কিন্তু ভাহাতে শরীয় শীভল হওয়া দূরে পাকুক ভীব্ৰ তাপে সারও সন্তাপিত হইয়া উঠিবে জ্ঞানামির স্থলস্ত শিখায় অন্ধকার না হয় यां छेक किन्नु मनः श्रीन यनि छ। होत् अतम हहेगा छ र्रि.

ভাইনে ভীত্র ভাগে চিন বেদনাগ্রস্ত আত্মা সহু করিছে না পারিধা যদি আরও গন্ধাণিত হইগা উঠে ভবে ट्रेंडिशन भारताक लहेंशा जागारिश शरहा कर कि ? याहात মিশ্ধ শর্পত সমূজ্জল শাস্ত অগচ দীব্রিসয় মাধুরীর ধারার চিরদিনের আঁ। গার বুচিয়া গিয়া মনঃ প্রাণ স্থলী তল হয়, ত্রিভাপত ও আত্র। চিরদিনের জত্ত জুড়াইয়া যায় সেই व्यार्थादात मा विक वामता हाहै। वामता अवत मृंगंकितानत डिथातो नहि, बाहात अगल सनल कित्रन-চ্ছটায় হাদয়গুহা ভাদিয়া অমুতের বন্যা ইহিয়া শেই অন্তর্গান তলের মোছন পূর্ণ চক্রম। যদি আসিয়া উদিত হন, তবেই ত জাগ্ল-চকোর ভাহার প্রেম্পীযুষ-পানে শান্ত হইয়া চির্দিনের ক্ষয় কুতকুতার্থ ইইতে शास्त्र । छ८ १ हे व या खित व्यक्तिया हित्रमित्नत निक्तान इहेट नारत।

তা গভীর অক্ষান পূর্ণ জীবনে আঁধারের মাণিকই আর্মানের লক্ষা ঐ সাভবাজার ধন মাণিককৈ প্রাপ্ত ইউলে ভার কোন ধনেরই আকাঞ্চা থাকে না। এক

(व्यक्ति गर्भ चार्ड छोहोत भीशोस मानिक संथन डो**डा**कि হয়, যথন তাহার দিগস্তবিভাগী প্রভারাশি ছুরিত ইয় তপন সেই এভার আকর্ষণী শক্তির সাহায়ে সর্প পোকা মাক্ড কীট পতসাদি ধরিয়া খার্তিস্ত ইহাতে গাণিকের णर्भमान कता इंग्र । चात धक (अभित मर्भ चाटिक, তাহার মাণায় মানিক যখন প্রজলিত হয়, তথন সেই मानिटकत अञ्चास मुद्रे रहेशा नष्ट्रन ठएन निरीम हहेशा (म निस्न इरेग्रा थार्क। जाशनात छोर्न जाशनि छ्वित्र। আপনার রসে আপনি মজিয়া সে নিয়াম হইয়া পাকে । बेहाताहे मानिएकत मना वर्ष। (म भानिएकत जगहुनान फेक्क्ट इति । निमग्न इतेश निभन्न निम्भान हात्य विमृक्ष थाकिए इस, समानिक आध इहेरन चात কিছ পাইবার বস্তু অবশিক্ট থাকে না, আর कामनात नम्न श्रुंकिशा शाउशा याश मा तगड़ भागिक रक श्री इहेगा छाहात पाता णातात अभा ইছে। নিতান্তই নিদ্দনীয় । মাঁহার। এক আপ্ত হইয়াই কুতকুতার্থ ১ইয়া

মাণিককে অন্যবস্তু পাইবার উপায় মনে করেন না, তাঁহারাই মাণিকের মর্মা বুঝেন। যাঁহারা ভগবচ্চরপঞ্জ আহিকে নির্কাণ্যদি হথের উপায় মনে করিয়া অগ্রশর হন, তাঁহাদের হাতেই মাণিকের অবমাননা—লাঞ্ছনা হইয়া পাকে। প্রকৃত ভক্ত অর্ক্তনের লক্ষ্য ভেদের নাার এক মাত্র মাণিকের দিকেই নিশ্চল স্থিরতর দৃষ্টি রাখিয়া তব্রপথে গাণিত হইয়া থাকেন। প্রকৃত প্রেমিক নির্বাণ- হণের আশা করেন না, জীবম্মুক্তির পিণাসা তাঁহার নাই, চতুর্বর্গের কোন কলেরই তিনি প্রার্থী নহেন তিনি কেবল তাঁহার চরণ হুখানির ভিধারি।

জন্তির ভিন্ন হারকের মন্ম মনো কি ব্ঝিতে পারে ?
বানরে কি মৃক্তামালার মূল্য বৃঝিতে পারে ? বিষ্ঠার
কীট কি পরমান্দের রগ অনুভব করিতে পারে ? নরকের
কীট কি স্বর্গীয় স্থার আস্বাদ লইতে পারে ? সেই
কাণ আনাড়ি—অভক্ত—অপ্রেমিক কি মাণিক চিনিতে
পারে ? ভাই একজন কবি বলিয়াছেন—
"শেলন প্রমের বাট চিনেনা,

ক্রেমে ডুব্ডে গিরে ছটি নর্ম ধাক্তে নর্ম মুদে হর রে কানা।

কাঠুরেতে মাণিক পেণে গোকানেতে দেয় গো কেলে, কাল পাধর বলে।

अधिमारत मानिक शर्छ ता बाल महाबात (हेत शाल ना।

সামান্য দোকানদারের হাতে যদি মাণিক পড়ে, ত'
সোমান্য দোকানদারের হাতে যদি মাণিক পড়ে, ত'
সোমান্য দোকানদারের হাতে যদি মাণিক পড়ে, ত'
সোমান্য দোকানদারের হাতে যদি মাণিক পড়ে, ত'
সহাজনের হাতে পড়িলে তিনি তাহাকে গুপ্ত কোষে
কত যত্নে কত আগ্রহে আবদ্ধ করিয়া রাখেন। নীরব নিজ্জনে বদিয়া বিরলে দে গুপ্তনিধির মাধুনী ধারা
পানে তিনি বিভারে হইয়া পাকেন। মণিবিশিক্ট
নিশ্চল ফণীর ন্যায় তিনি আগাধ ভাব-গাঁতীর হইয়া
আচঞ্চল সমুদ্রের ন্যায় খিরধীর হইয়া যান। মাণিকের
দিবছেরিত তরক্ষে প্রাণ মন ভাসাইয়া তিনি আজাহারা
হইয়া যান, অঞ্চলের নিধি বুকের ধনকে বুকে রাখিয়া

बाध इरेटल इस 👍 इंडताः माठ कर्द्वात मामनात गाथा क्रेंटि मानिक आगता सहेत्र कथा। ज भारभन नातित मा। दक्तमा वामात्मत कुछ मामर्था, कुछ खान कुछ शतामास् । भिशस्त्रताशी (यात शज्जकारत गर्मि मानिक स्वत्य व्याविष्ट्रं इत्रेश (मथा (मन स्वर्हे ख णाभारतत ভिতর ও বাহিরের সমস্ত আঁণারই যুচিয়া गाइएक भारत। जाभारमत गठीत अञ्चलाताव्हत कोर्न कृषिता लुकान तंजन यमि आधाउ रहेशा छेर्छन उर्पहे ভ খাণাদের ভাশ। মিটিভে পারে, চির অন্ধকারাজ্য शृङ् छित छे जिसाता इहेटल शास्त । आभता औषारतत मानिकतक वतक कतिहा ताचित्व हाहे, डाँशात बाता चात चना (कांग काशा करिएक ठांडे गा भगरिक श्वलाता विशा जायता खुड़ा हेट हा है। शार्वत माम और क र धर्मत कात शता हैशा खीं ह शुक्रा खींन উপ্রার দিয়া গোপনে অপুকর্মাধুরী নিরীক্ষণ করিন । ব कांग(डत (कह (मिथिटन ना अग्रेडित (कह छोन्टन ना. निइंड निब्दन करक (ग स्थात वासाम नहेंग, हेराहै कामारणते वामना ।

পুনের খাতিপন করিয়াছে, অনুকার ৬০০ পানার্থ भेटर, प्रभाव किनिम नटर, जात्नक मभग्र क्या कात माध्यात া জীবের ঘোর অন্ধকারেই আঁধারের মাণিক দেখা দিয়া থাকেন। অক্সকারই তাহার বিগুচ্রিভা भाकर्यन कविशा आदन । आधिवानिशय ज्ञालायज्ञनां रेनतारभात (यात ज्ञासनारत स्त्रीत मध्यत ব্যাকুল হইয়া তাঁহার দিকে চার । তথ্য সেই তুদ্ধি-अभागिनात भुका भक्ति जनमञ्जन कतिया श्रीधाटतन गानिक जन्छीर्भ इरेशा शास्त्रन। कि स्नानि औषादत्रन স্থিত মাণিকের কি গুপ্ত সম্মন্ত্র আঁপার এইলেই তিরি **८मै** फ़िशा भारमन । **अञ्चलारतत** अञास्त्रतहे छै। हात বিমল ভোৱি বিকশিত হয়। ভাই যথন কংসের ভীষৰ कातागारत (माकी अवद्यासन ह्यात शक्तकारत पृतिहा-ছিলেন, সেই অন্ধান স্তুপ বিদীপ করিয়া খাঁধারের মাণিক উন্তুত হইয়াছিলেন। যে মাণিককে প্রাপ্ত হয়য়া গিণাছিল। প্ৰহলাদ যথন পিতার আজাগ বিষ্ণান

कतिएक विनिधा हार्तिमिक् च्याकात प्रिथियाहित्सन তখন বালগোপাল মু'র্ভতে আঁাণারের মাণিক দিয়াছিলেন । স্বভরাং যে অন্ধুকার প্রভুর সন্তাকে প্রকৃতিভ করে, জগভের চক্ষে তাহা ছউক, আমরা সেই অদ্ধকারে ডুবিতে চাই । আন্তন সকলে মিলিয়া প্রার্থনা করি, প্রভো! অন্ধকারসাগরে আমাদিগকে নিময় করিয়া দাও ! সেই গাঢ় ঘন গভীর অঁ। শারের মাণিক হইয়া ভূমি দেখা দাও। শভবিদ্যাৎমাধান শভচক্রনিংড়ানহুধামাথ৷ ৰুপধানি লইরা একবার দেখা দাও। নাধ। তোমাকে टक्षन कतिशा ভाकिতে इश कानि ना । इक्ट प्रदेश्यक যেমন না ডাকিলেও তাহারা আসে, সেই রূপ আসিয়া হুদর কন্দর উদ্রাসিত কর। এ দীন ছু:খীর অস্কুকারাচ্ছর ভগ্ন সন্দিরে গুপ্ত নীলকান্ত মণি রূপে একবার উদিত **र ७ । इ: थी की** व চति जार्थ रहे सा वा छेक, जाहात हित बिटनत चौषात्र युविया याळेक PUBLIF